

आचार

॥ २६ ॥

लावेने पालेते हेने केवल पदनी प्राप्ती थाय। गुरु
 जी सत् श्री परम गुरु क रुणा सागर महराज जी
 सत केवल सत छे ॥ इती श्री आचार पत्री का सं
 पूर्ण ॥ समाप्त ॥ संवत् १९२५ ना सावण सुदी ३
 समाप्तः ॥ ॥ श्री मत् परंम गुरु सत केवल प्रसन्न
 अथ प्रचरत सागर ग्रंथ सकत सीधांत सुष्म
 वेदोपनीषध प्रारंभः ॥ प्रथं मन्त्र स्तुती ॥ ॐ प्रथं
 मन्त्र न जल तजत्री ये मा सत पकी न ॥ जपे म्म सरनी
 जजाप कु ॥ लीये परम गुरु ची न ॥ १ ॥ आ ई रे व डे म म
 स न मु ख ॥ अ मृत व दे व चं न ॥ मा ग मा ग सु ख यु की
 यो ॥ जो उ र ही य ची त वं न ॥ २ ॥ उ भ ये क र क रु णा य
 से ॥ जो र की यो ज बी मो य ॥ क यो अ लो की क ग्रं थ
 कु ॥ व द न ह मा रे सो य ॥ ३ ॥ भु ले ह भ र म स क ल भ
 वा ॥ अ र वी ल आ य न र लो य ॥ नी र गु ण स गु ण उ पा
 स मे ॥ जी न मे क्र ता न को य ॥ ४ ॥ तो आ भ व भ र भो वं
 न के ॥ क व न उ पा वं न हा र ॥ न्या य स ही त न र णी त
 क हे ॥ सां म्प्र त स र ज न हा र ॥ ५ ॥ म म उ र ए ही म ती
 र थ ॥ सु तो पर म गुरु आ प ॥ मा ग मा ग सु ज कु की
 यो ॥ जी न के ए ही ज वा य ॥ ६ ॥ आ य नु ग त अ ब ल गे
 ल ह ॥ जी न की न ही पे हे चां न ॥ सो नी ज पर म क्र ता
 र की ॥ जु ग मे क रो स जां ण ॥ ७ ॥ नी ज य ती के क्र त

कीवीनु॥ ईश्वरजोतपुजंत॥ व्यापकबुद्धिभास
 लु॥ वीनुनीजक्रतामंतंत॥ ७॥ भवभरसकल
 सीधांतकु॥ सक्रतवीनुसबेव॥ नीएकरोतीज
 न्यायसे॥ लखवोक्रतातदेव॥ ११॥ सकलउपास
 नकेजन॥ तीमकुकरोसचेत॥ बकसोनेनन
 वीनजीनु॥ होयतीजक्रतासवेत॥ १५॥ पावीधको
 तीधकोजीमे॥ मरममनोरथसार॥ अकलीतग
 तीअलोकिते॥ ममघटकरोउचार॥ ११॥ अबउ
 रअवाहनमम॥ तुमेरोकरोसथाप॥ प्रणीतवु
 मंगलाचरनन॥ जीनमेसकलअवाप॥ १२॥ अ
 थमंगलाचरणप्रारंभतेः॥ सोहंपरणीतंमंगं
 गुणरहीतअखीलवीत॥ आद्यअंतमध्यमाहाद्य
 स्वाधसचीदानंदकेतीत॥ १॥ जेकैवलकीरतार
 वारवीनुअतीअपरंमपर॥ जीनकेषबलपसा
 र॥ न्यारकेत्यारसभरभर॥ २॥ सभराभरपरका
 स॥ तासतीनुअलगप्रकासीत॥ सोनीजपद
 कैवलसनातन॥ जाईतनउतईत॥ ३॥ तीनके
 अंसजाहांन॥ भानवीनुअमीतदेखीतजीत
 पवयेहपुरुसमाहांन॥ ज्ञानजीनुकरनहंसहे
 त॥ ४॥ अकलकलातीजआप॥ कलाधरीकार
 जकरना॥ कैवलकरुणासंधु॥ अहोधंनअस

॥ १३ ॥

रनसरन ॥ ५ ॥ तेयंगनमोकुवेराय ॥ परमगु
रूपुरसपुरंजन ॥ लीनमनुजन्नवतार ॥ का
॥ २७ ॥ रनजीनुभवभयभंजन ॥ धंनधंनएहीधर
न ॥ परनपरसीधपावंनपद ॥ सुक्रीतमयेजु
गजंत ॥ तंतदरसीतजीनुजीनुसद ॥ ७ ॥ परम
पुनीततेहीसंत ॥ सदाजेहीरहतसरनगत ॥ ३
गपुन्यहरीजंन ॥ मंनजीनुग्रहीतअनीनरत
८ ॥ करतकरतएहीदीप ॥ खंडपुनीदेशनग
रनरा ॥ अतहीप्रीडरसीवंत ॥ रचीतजांहांधा
मसधरधरा ॥ ९ ॥ प्रबलपुनीतपरमेअ ॥ वेसधरी
वीश्ववीलासेहु ॥ सकलसजनसुखदेनवेतम ॥
हीचेनप्रकासेहु ॥ १० ॥ पसुपंरवीवस्ववेलसही
तजीवकीटपतंगधर ॥ वसहुनग्रजीनुनीकट
होहुगतीअचरचराचर ॥ ११ ॥ दरसपरसनी
सदीन ॥ धंनतेहीजंनपरममहद ॥ अमृतवच
नरसाल ॥ सुनीतनीजमुखनअवनसद ॥ १२ ॥
करुणाकरनकटाक्ष ॥ करहीनरनारजेहुन
पर ॥ लोकचतुरदशमांहाय ॥ तायउतईतनही
सरभर ॥ १३ ॥ जीनुरजचरनप्रसेतदहीतअ
गकोटीकल्पसत ॥ वसहुसधांमसदाय ॥ जा
हीपददुवमअटलअत ॥ १४ ॥ जीनुजनचरन

प्रताप रजनके एही वीधी अदभूत । तो सद्गुरु
 मही माय । वनत ईत कही कीनु समजुता । १५ । अ
 ती गती अग म अथाह । या हवीनु पुर सपुरे सा
 सत गुरु सां मत माहा । राह जीनु अकल सुरे सा
 १६ । कपावरनु मती मंदा । छंद सा हेव सुक्रीत सम
 नेती नेती जीनु सस । पक्षु नही पारती गम गम
 १७ । मम गती कुन चलाय । चकीत अही पती चतु
 रानन । साम्रत नही सरसत । मत मोदीत गाय
 न गन । १८ । तबते अज अज माल । आद्य मधु अं
 त परा पर । थकीत भये सब संत । अंत अनु भवी
 कवी कुलधर । १९ । जेही जीनु बुध अनु सार । सा
 र गही पये ह परम सुख । कंचीत लही अचरत ।
 बाई गुरु की गुरु सन सुख । २० । गुरु परम लख
 परम । देल आपनी जवी चारंन । पुनी नीज पदे के
 वल । लखावन कुल करतारंन । २१ । साषी एही
 नीज मंगला चरनन । ग्रंथ करन जीनु आद्य ।
 अचरतरत गुरु परम की परहारी अखिल उ
 पाद्य । १ । प्रथम अस्तुती वी नये सकत सीधांत के
 दा । १ । प्रारंभः । परम गुरु करतानीज । एहने
 म अदाग । जुगल चरन पंकज सदा । मम चीत अ
 ली अनु राग । १ । सोचीत अली अनु राग के । ओरु

॥ १॥ फलसंतसमाग ॥ उमडे एकही कालसे ॥ तबहंम
 भईसोहाग ॥ २॥ सोहागनगुरुपरमकी ॥ अरपी
 ॥ २८ ॥ तततमंतप्राण ॥ अत्रकषुगुनगावागती ॥ येरे
 हुक्रपानीदान ॥ ३॥ बुंलजोनकीजायना ॥ उत्तम
 कुलअभीसेस ॥ सोअभीमानहनीहरी ॥ नीरम
 लकरोनरेस ॥ ४॥ मेअबलातनुपखनकी ॥ अ
 नीतपणेनीजदास ॥ उभयेपदपणीपतनकी ॥
 करनकीचरननीवास ॥ ५॥ कोटीजनमजुगजु
 गनकी ॥ मेनीजअंशतुमार ॥ सांमृततुमसेक्या
 छपी ॥ राखनसदालाहार ॥ ६॥ लाहाररखननीर
 वाहन ॥ करनतमीकीरतार ॥ मेचैतंनलघुवालसे
 तुमजनुनीरखवार ॥ ७॥ जोरीपांणअबजाचुह ॥
 बकसोगरीबनवाज ॥ सरलकरोसुधबुधमम
 उचरेहग्रंथअगाज ॥ ८॥ ज्ञानध्यानवीज्ञानलेअ
 नुभवगुणभंडार ॥ वसुहनाथममहरदेतब ॥ ग्रंथ
 होयसुभसार ॥ ९॥ अंगअंगवीवीधीवीध ॥ अरथ
 बोधसुवीचार ॥ भीनभीनभवलहेतुह ॥ होयअनु
 भववीस्तार ॥ १०॥ अतहीवीनोधकरनजन ॥ गा
 वुहसोहीगुंनग्राम ॥ केहेअचरतएहिग्रंथके ॥ अ
 चरतसागरनांम ॥ ११॥ जेहीग्रंथअचरतनीधी
 ज्ञानरतनभरसार ॥ मरजीवाकोईमाहाजन ॥

लेवहीतत्ववीचार॥१२॥ तत्ववीचारवीलोकके
 सुरतनीरतकरीथीर॥ नीजजनकुदरसायके
 वरतावनसुखसीर॥१३॥ जोसुखसजनसमे
 हकु॥ सुनतग्रंथएहीसार॥ दुरलभअजअहीप
 तीनकु॥ पुनीभवसरीभरथार॥१४॥ ओरुईइ
 दीकसुरसरतरकीकुनगनीत॥ अतीअथाह
 पतीपरमकी॥ गाथागुनअगणीत॥ भवउतपन
 अवलगलोह॥ कीनेहुग्रंथअपार॥ नीगमलस
 गमग्रभीतव॥ येवटबुलआधार॥१६॥ इतीश्रीअच
 रतसागरग्रंथदीतीयोकंदसंपुर्ण॥ त्रतीयप्रभंरांमा
 नुजओरुसंकरा॥ वल्लववीषधरव्यास॥ सहीत
 कपीलआचारज॥ नयेभवपुंजप्रकाश॥१७॥ वेदव
 दीतबुलवीदभल॥ माहमतवालअमीर॥ जग
 जीवनहेतकारन॥ मनुतनधरेसरीर॥२॥ अब
 तीनुसकलमतंतकी॥ सुनोसजनजनसोयए
 कएकयेजीनुजेहीगत॥ तेहीलखवाबुहमीय॥३॥
 संकरकेअहीतमत॥ बुलअकरतासोय॥ अखा
 वंतजगकहतही॥ जोमघअमीतवतोय॥४॥ ओ
 ररजुसरपवतगत॥ सुक्कीरजतवतसंच॥ जलत
 रंगपतीबीबुके॥ लखीतन्यायपरपंच॥५॥ आयु
 अंतमधुउतइति॥ एकहीबुलनीघांन॥ एसबुडल

॥ आ. ॥

॥ २६ ॥

दी सुलटमे ॥ नीरखनको अज्ञान ॥ ६ ॥ जेही नीज
ज्ञान जथा रथ ॥ ओरु इति अखी लउपाध ॥ इष्ट
कही दोहनके ॥ तो बंस अग्य अनाद्य ॥ ७ ॥ इसर
तो कोई हेनही ॥ संकर ज्ञान मतंत ॥ जदपी भरमभ
यो बंसकु ॥ जो होय एक मतंत ॥ ८ ॥ तदीप भुलर
ही बंसकी ॥ कीही कीनसे नीरवाहाय ॥ संतावत
माहा अगनकु ॥ सीत करन कुनसाहाय ॥ ९ ॥ ए
ही अद्वैत सीधांतमे ॥ दोसापती दरसंत ॥ नीजप
दकु अज्ञानकी ॥ कीही कुनश्रुतिकथंत ॥ १० ॥ जो
अगनां नीजगकहो ॥ पणदृष्टानही दीय ॥ तबले
दोसापतीनके ॥ नीरवाहननवहोय ॥ ११ ॥ वीनु
नीरवाहन दोसन ॥ अकरत बंससीधांत ॥ आ
सेनीज अंतरतरो ॥ संकरकीन मतंत ॥ १२ ॥ अ
बरामानुजके मत ॥ कहत सीधांत सुनाय ॥ जी
व बंस ओरुमायके ॥ त्रीयेपद परमपराय ॥ १३ ॥
नहीन उदीतको हुकोहनसे ॥ तो कारनको हु
कीन ॥ रहत अनाद्य सदादीत ॥ त्रीयेपद भीनके
भीन ॥ १४ ॥ तब करताकीकोहनके ॥ ताते अक
रत बंस ॥ दीरघलगे एही दीसण ॥ नहीन अधीक
पद परम ॥ १५ ॥ जो चहीतन संमतकीहो ॥ तोमा
याप्रबलीत ॥ थायरही चर अचरमे ॥ अगणीत

अग्यजनीत ॥ १६ ॥ कोटीकल्पहृजीवकोहानी
 जपदनाही समाया ॥ एदोसणुसरनअती ॥ रा
 मानुजनमताया ॥ १७ ॥ ओरवदीतवीदत्यायके
 भक्तीत्यागदृढकीन ॥ करमधरमकुसलपुमे
 रामानुजपरवीन ॥ १८ ॥ बीहीरुकीयेहसतमा
 हाद्यसे ॥ अदीतसीरसंवादा ॥ सुसकज्ञानछेदी
 रवे ॥ भक्तीत्यागपतीपादा ॥ १९ ॥ एहीजीवनकु
 सुरलभ ॥ प्रपदपावनपंथा ॥ ब्रह्मज्ञानमेभरम
 त ॥ मीलेनमीलसीकंथ ॥ २० ॥ कंथमीलनकीक
 लपना ॥ जीवसकलउरछेदा ॥ अदीतमेकोहोके
 हुनको ॥ पावनकरेउमेदा ॥ २१ ॥ जोकदपीअज्ञा
 नसे ॥ वीगतववीनावीलाप ॥ एसीकोहीतोजी
 वको ॥ तीसेहवोसथाप ॥ २२ ॥ अल्पज्ञेगतजीव
 की ॥ सरवज्ञेसदब्रह्म ॥ नीगमस्यश्रुतीदेशव
 हु ॥ नहीनअज्ञपदपरम ॥ २३ ॥ जदोपदोसअ
 दीतपदे ॥ जीवब्रह्मवीनुभीन ॥ भीनहोयतोजी
 वसीर ॥ तीजपदसदानचीन ॥ २४ ॥ तदीपक
 रमओरुधरमही ॥ जोगध्यानजपत्याग ॥ सं
 भवतवसबजीवनकुं ॥ कारजकरनउमाग ॥
 २५ ॥ एहीवचनहेतकारन ॥ मृदुलमनोरथसा
 रासकलभावसुधरमनको ॥ जीनमेचलेवेहे

॥ प्र. ॥

॥ ३० ॥

वार ॥ २६ ॥ सुधरमधरमनसे जीनु ॥ भवपारंग
त होय ॥ सुनकादीक सुषुशीवदत ॥ सुधरम
चले सकोय ॥ २७ ॥ जो सुधरम अधरमनको
उभे करही के हुनास ॥ ज्ञानवीटल सुधरमत
जि ॥ पणतटले तनुपास ॥ २८ ॥ तेही तनुकत अ
धरमनकुं ॥ सुकरमुलजग जोय ॥ जीवसकल
चर अचरके ॥ जीनुबंधन सबकोय ॥ २९ ॥ तेही
बंधनमुगतावन ॥ त्यागभक्ती जीनुकीन ॥ जबह
यज्ञानजयारथ ॥ तायपरहीपतीचीन ॥ ३० ॥ नी
जपतीपरमचीनायते ॥ करहीकपालसहाय ॥
सोनीजकपासहायते ॥ जीवपरमपदपाय ॥
३१ ॥ यावीधके अनुकरमसे ॥ कोटीकीयेहुजन
पार ॥ धंनधरनपरहोईगये ॥ रामानुज अवता
र ॥ ३२ ॥ सरीमतवहलवाचारज ॥ जीनुअद्वैतसु
धाय ॥ जगवीलासखयुबुद्धहे ॥ नहीपरपंचयु
नाय ॥ ३३ ॥ पंचतत्वेईदीदश ॥ अंतसकरनस
माज ॥ एसर्वसाजसहीतजीनु ॥ वीलसेसरीम
हराज ॥ ३४ ॥ नामरूपगुणसहीतम ॥ पुरसप्रक
तीमुदाय ॥ बुद्धवीनाअणभरनही ॥ एअद्वैत
सुधाय ॥ ३५ ॥ जनममरनजीनुसुखदुख ॥ ओ
रुजगजडपरभाव ॥ एदोसनदुर्घटगती ॥ बुद्ध

कुप्रती अत्याव ॥ ३६ ॥ बोहोरुजगतप्रज्ञानकी ॥
 तेहीनघटतपदबुंसा ॥ एदोसापतीदुसरही ॥ लगे
 करमन्हेकरम ॥ ३७ ॥ एहीअद्वैतसुधायको ॥ कंी
 नमरमगतीसार ॥ वहलवओरुवीवलतणो ॥
 अनुभवतत्ववीचार ॥ ३८ ॥ वीसीयाननवरता
 वन ॥ करनआपईतीहास ॥ तेहीमतलबका
 रनकीये ॥ जडजगबुंसावीलास ॥ ३९ ॥ जोजड
 जगखलुबुंसाहे ॥ तीक्योभयेप्रज्ञान ॥ ओरुकोई
 कोईमहीसंतही ॥ पायेहुज्ञाननीदान ॥ ४० ॥ ज्ञानी
 ओरुप्रज्ञानही ॥ एहीउभयेअनुक्रम ॥ घटेनही
 अदीतपदे ॥ क्योउचरेवीनुमरम ॥ ४१ ॥ मरमल
 हेवीनुमाहायनो ॥ आपथकीपतीअंत ॥ प्रभुय
 इनेवीसीयेवहे ॥ ईडीनेअवीलांत ॥ ४२ ॥ पोताथी
 कोईपरनही ॥ उरअदीतमतंत ॥ बुंसाकीरप
 तंगल्यो ॥ असमीकहेसतंत ॥ ४३ ॥ पणनलहेग
 तीतरणकी ॥ पुनीनीजतनकीआद्य ॥ नाउदे
 खादतवेदकु ॥ कुनलगीमोईब्राध ॥ ४४ ॥ योंअ
 तरअज्ञानही ॥ मुखसेकेहेसतंत ॥ एसेज्ञान
 बीटंडसे ॥ भवभुगतेनहीअंत ॥ ४५ ॥ जोंतरप
 तकीनारको ॥ नरपतथईकरेसंग ॥ ज्ञानपरे
 नीजनरपकु ॥ तुरतकरेतंनभंग ॥ ४६ ॥ तीनर

॥ अ० ॥ पतकरतानीज ॥ जीतुतारसंसार ॥ तीनमेसु
 गताथैरमे ॥ अंतैखावहीमार ॥ ४७ ॥ यावीघ
 ॥ ३१ ॥ केअनुभवभये ॥ सांभ्रतक्रतानचीन ॥ त्याग
 भक्तीवहीतलवीट ॥ कोहुकेनहीआधीन ॥ ४८
 पापपुंनथीतवडरे ॥ अंतरगतमेएह ॥ वीश्व
 रगतसुभकरसको ॥ राखतउपलोवेहा ॥ ४९
 जीनमेकरताकोहोकीनु ॥ समऊसीधांत
 सुधाय ॥ यात्येपणछेवटरहे ॥ अकरतसरस
 मुदाय ॥ ५० ॥ सुतोत्यायकेनरमीत ॥ पंचतत्वए
 णप्राय ॥ आद्यअंतअणवतरहे ॥ समलेअष्ट
 तदाय ॥ ५१ ॥ पणनीजअणअनाद्यके ॥ आद्य
 अंतमधसोय ॥ कषीकाजवतईश्वर ॥ बीसर
 नकरनसमोय ॥ ५२ ॥ कषीबीजनहीकरतल
 नीजकणकरनपसार ॥ तोंकषीवतपदईश्व
 र ॥ मुदेननीजकरतार ॥ ५३ ॥ एहीनीजन्याय
 सीधांतके ॥ नरणीतकीयेनीरूप ॥ इन्मेपण
 अकरतथपे ॥ नहीनीजक्रताजनुय ॥ ५४ ॥ सक
 लतत्वअणआद्यके ॥ कशीतन्यायनीजथाप
 तवकरताईश्वरकीनु ॥ अकरतरहेअवाप
 ५५ ॥ सांभ्रसिधांतकीकहतहु ॥ नीजगमल
 सलखाय ॥ आचारजमुनीकपीलही ॥ जीनुअ

नुभवकरताय ॥ ५६ ॥ सकलतत्वप्रवीलोकीके ॥
 भागत्याग करीभीन ॥ वदीतअलगप्राप्तसदा
 नरमेयुमोक्षनचीन ॥ ५७ ॥ आपनाआपवीसर
 नते ॥ वीमुखुहतेअज्ञान ॥ आपलहेनअमुकही
 जबपायेएहीज्ञान ॥ ५८ ॥ नलहेआपअमोक्षये
 आपालहेसमोक्ष ॥ ईतमेपणकरतानीज ॥ रही
 गयेपरमपरोक्ष ॥ ५९ ॥ आपालहेसमोक्षहीक
 रहीतत्वतग्यांन ॥ एखासांमृतआपथ ॥ तीक्या
 थाअग्यांन ॥ ६० ॥ जोआगेअज्ञानथा ॥ तदपीहे
 हअवफेरा ॥ वीचज्ञानतेक्याभया ॥ एअखबुडअं
 धेरा ॥ ६१ ॥ जीनुपरसतअज्ञानही ॥ तीनसेमोक्ष
 नहीय ॥ तबत्येअपनाआपनंस ॥ नहीनका
 जवीधीकोय ॥ ६२ ॥ भागत्यागकरतानीज ॥ उव
 रीतसांख्यसराय ॥ एहीव्यापकअदीतपदे ॥ पु
 रणबुंलपराय ॥ ६३ ॥ तबआपाथाबुंलही ॥ पु
 रणपदेसतंत ॥ तीनुआगेअज्ञानकी ॥ कहहीत
 सांख्यमतंत ॥ ६४ ॥ जोआपाथाबुंलही ॥ तीनुभ
 याअज्ञान ॥ इसरवीनाएहीदोसन ॥ तीजपदस
 गेनीदान ॥ ६५ ॥ अबनीजसेससीधांतकी ॥ कह
 तसुनोचीतलाय ॥ साधनपणवसमासके ॥ जो
 गंदरमतताय ॥ ६६ ॥ जोगंदरजतमतरही ॥ तन

॥ आ ॥ सोधनगुणज्ञान ॥ आयचीतंतारहीगये ॥ नीजप
 तीपरमवेकांन ॥ ६७ ॥ तेहीआपानीजअलपीत
 ॥ ३२ ॥ हवीनतत्वरंगीन ॥ पुनीततवीछरनकाभया ॥
 जबनीजक्रतानचीन ॥ ६८ ॥ ज्यौंतांवाक्रतकुंभकु
 लगीतवकीलमीसकाय ॥ मंजीतहोवतउज्वल
 फेरीकायनकीकाय ॥ ६९ ॥ तेहीकुलदरवस
 कलसीरअधीपतपारसदाम ॥ जीनुपरसत
 घटनीरमल ॥ कबहुनहोवतसाम ॥ ७० ॥ ल्यौंघट
 वतनीजआपनपु ॥ क्रतापारसपरसाय ॥ बोहे
 रूलगेनहीकीलमीस ॥ असपारंगतथाय ॥ ७१ ॥
 १ ॥ जबआपानीरमलकीये ॥ साधनकरीतसको
 य ॥ नीजपतीपरसवीनापुनी ॥ ज्यौंकात्यौंकीखहे
 य ॥ ७२ ॥ एहीमतपातांजलीनके ॥ कीलमीसगये
 सकाज ॥ तवतेनीजकरतायकी ॥ करननरही
 समाज ॥ ७३ ॥ अबजेहीव्यासमतंतकी ॥ सुतो
 सीधांतसकोय ॥ करीतउभयेपतीपादन ॥ क्र
 ताअकरतासोय ॥ ७४ ॥ क्रताकीनईश्वरपद
 सकीसहीतसनमंदा ॥ बंलअकरताधुडकीये
 कारंनकंदपुरंद ॥ ७५ ॥ नीगमचतुरअवीलोकी
 के ॥ देपायतलखलीन ॥ तीनकीसाख्यसकल
 मही ॥ जेहीग्रंथुजीनुकीन ॥ ७६ ॥ ओरुसवआ

चारजनमे। गतीगमज्ञानगुनेस। प्रसीधप्रोद्धु
 गजाहेर। तीनमेवासमुनेस॥७१॥ तबतेवास
 सीरोमणी। वदीतमद्दुलतीतीत्याय। धीमत
 धर्मधोरंधर। जोरत्येप्रधीकप्रभाय॥७८॥ पण
 नीसेमुनीवासके। अंतरगतकेअंत। छेकस
 नातनकेसदु। अकरतबुंलअतंत॥७९॥ जीनु
 लखलहीतवेदांतसे। अतीअनुभवगतीमाहा
 या। इष्टचराचरपसरीत। तबतीनुगतीअघाट
 ८०॥ तिहीनीजकरतवेदांतमे। वदीतद्वैतभ्रमभा
 व। जेहीआगेममकहीहुती। कताअकरतात्या
 व॥८१॥ अकरतपदअवीलोकन। परमहंसप
 येपांन। कताअखीलकुललोकके। उपासकअ
 वीलांन॥८२॥ जेहीजंमजुगतजथारथ। तेहीत
 मकहीतप्रभाव। सरलगंथसुणताजीनु। कोहुं
 नधरतअभाव॥८३॥ सरवज्ञेसदचीदमये। पा
 वंनपरमसुजांण। अहोधंतमुनीवासही। उच
 रेश्रुतीप्रमाण॥८४॥ ज्योश्वटदहतवछंदर। भी
 नभीनप्रबलीत। सोकुलआचारजनके। अनु
 भवअलगअमीत॥८५॥ पणछेवटनीजसबन
 को। नीसेअकरतमरम। रसाअज्ञजौंदाहको
 अंतैएकहीधरम॥८६॥ प्रथमअज्ञजुगकारीये

॥ आ ॥

॥ ३३ ॥

दीपकप्राद्यसजोत ॥ सीतवीहुतवडवानल
पंचमोऽर्कउदोत ॥ ८७ ॥ अगोदहनहीसबन
को ॥ परलेकालजमुंज ॥ त्यों आचारजसबनकी
अधीकमनुंनसमुंज ॥ ८८ ॥ दहतसकलबुंल
अगतसे ॥ नामरूपगुणजेत ॥ पणनामातीतना
मीकु ॥ कोईकेवीरलावेत ॥ ८९ ॥ जेनदहतबुंल
अगतसे ॥ प्राद्यअंतमधसोय ॥ ज्यो तेउलदअभा
सते ॥ सुरजलततहीकोय ॥ ९० ॥ त्यों तीजपती
रवीभासकु ॥ वदीतव्यापजेहीबुंल ॥ तेहीपणआ
द्यअनायके ॥ करतरहीतहेकम ॥ ९१ ॥ कलदा
यकतहीकेहनके ॥ तहीनकरतकीनुसाहाय
जोवीदलपतीपुरसते ॥ पतनीप्रजानपाय ॥ ९२ ॥
२ ॥ रवीकरतेजप्रकासते ॥ उदेअस्तलुसोय ॥ त
रहीनएकहीदीपक ॥ वीनुहअज्ञनीजसोय
९३ ॥ ओरुनहीअंतसमावंत ॥ प्रापनुआपती
नुसाहाय ॥ जोरवीसुतरवीभासमें ॥ मीलेनमी
लसीजांहांय ॥ ९४ ॥ त्यों तीजअंसअनायके ॥ प
रमपुरसकेसोय ॥ तेहीक्यों मीलेअभासमें ॥ प्र
तक्षज्ञानगमगोय ॥ ९५ ॥ प्रकृतीपुरुषइश्वर
गुण ॥ तीनुउपरीतबुंलव्याप ॥ कीनेहसकलसी
धांतमें ॥ कताअकर्ताथाप ॥ ९६ ॥ तेहीइश्वरप्र

कृती गुन नही को हु करता अनाय। एही नीज
 कारन के करत ॥ ज्यो इति अरवी लउपाध्य ॥ १७ ॥
 अकल उपाधी ते ईश्वर। कली तत त्वत नु जीव
 सो जुग मन गुण वर जीत ॥ अकरत बंल सदैव
 १८ ॥ चार वाक सुनवादी के। सुनीयो ता यसी
 धांत ॥ खट आचार जमा ही जीनु ॥ लखे न मीथ्य
 मतंत ॥ १९ ॥ सुनवादी के हे सुनते ॥ उत पत पर
 म पराय ॥ बो हो रु ली न होय सुन मे। करता को
 हुनताय ॥ १०० ॥ सुन समो वड कहत हं ॥ ओर के
 लक्ष्य लखाय ॥ अंध कार ओरु तां मही ॥ काल
 खेपन पर भाय ॥ १०१ ॥ नाम तो लगे के नार से
 ता बी नरक मन रंच ॥ एणी जत्रीये पद को जे
 ही ॥ प्राय अंत मधे संच ॥ १०२ ॥ एही त्रीये पद
 रणी तनी ज ॥ कह जीनु तंत जनुप ॥ व्याप सतंत
 र सर भर ॥ अविचलयणे अनुप ॥ १०३ ॥ नीम स
 नीम सपल पल घडि ॥ वही तजात जे ही वेर ॥ वी
 ते ही बो हो रन पाईये ॥ एही काल गत सेर ॥ १०४ ॥
 अब सुनीयो तम की कहं ॥ सुन सम सदा सतंत
 जीनुप सरण अ परं म पर ॥ जांहां लो अ मरु के
 अंत ॥ १०५ ॥ त्रीतीयो अ मरु अ चल अ ज ॥ तीनुप
 ए स कलय सेर ॥ ज्ञानी गम ज्ञाता जुवो ॥ नीजने

॥ ३४ ॥ ननु सेहेर १०४ ॥ रवी कर ते ज प्रकार ते कबहु
 कहो तम जाय ॥ पंचतत्व सुरपुर गये ॥ तम तम
॥ ३४ ॥ नु तम प्राय ॥ १०७ ॥ नास्ती नही एही त्रीयं तकी
 कलयो कलय सदायं ॥ प्राय तम धन जल म
 पण ती जप दन कहाय ॥ १०८ ॥ को कर ता एही
 त्रीय न के ॥ अमर अचल नर वेव ॥ साक्षी वी
 ना सु सक गत ॥ नड वत कंड त देव ॥ १०९ ॥ सी
 थ्या जे ही पती वादी कु ॥ वाद कर न कु सोय ॥ अ
 र स अजर अवी था ह ही ॥ पण च ही त न न ही
 कोय ॥ ११० ॥ सुं न वा दी जे ही सुं न के ॥ कह त सी धा
 त अथाय ॥ लगी ती न ती नु सर भर ॥ एक की कुं
 न च लाय ॥ १११ ॥ एही त्रीये पद सद अ कर त च
 ही त न वी न वी द ता य ॥ जो रु जे ही अ ही त वं
 ह ही ॥ कर त प खे स म ता य ॥ ११२ ॥ द्वी ती यो कं द
 २ ॥ त्री ती यो कृ ता अ भी प्राय दे खा वं न स क त सी धा
 त कं द ॥ अ कर त जो रु अ ही त प वे ॥ क थु न उ प
 ज त का ज पु नी दै ता प ती से व ने ॥ क त के क र त
 स का ज ॥ १ ॥ ए ही उ भ ये ती र गु न गु न ॥ अ ही त
 इ त दै ता य ॥ प कृ ती पुर सु गु ण ई श्व र ॥ इ त के स
 क ल प सा य ॥ २ ॥ इ त इ त से क थु ना व ने ॥ ती त के
 की या वी ना य ॥ जो कृ त भंड कु ला ली के भंडे भं

इतथाय ॥ ३ ॥ ओरकटोरागंजके ॥ इएपरतरक
 ताय ॥ खोलतईतनीकसतबुद्ध ॥ तीतकीनाजे
 तनाय ॥ ४ ॥ तेमाटेकशुनाबने ॥ इतइतसेअएवंत
 सकलजांहांनतीतकेकीये ॥ सकीजोतप्रजंत ॥
 ५ ॥ उतईतकेओरुतीतनके ॥ करताकारंतकं
 दा ॥ जीनकीकरीसकलकुल ॥ रचनारसीकस
 मंदा ॥ ६ ॥ पीछेदीयेपसारंत ॥ सबदेवनअधीका
 र ॥ जेहीजीनसेजेतनाबने ॥ तेतनालीयेसका
 र ॥ ७ ॥ करतकाजतबसुरसबे ॥ जेहीसीरलीये
 संबंध ॥ भयेसकलयोबंधन ॥ करतारहेअबंध
 ध ॥ ८ ॥ बंधनपणअधीकारकेरीककरीतस
 बलीन ॥ जोरजवरसीरकोहनको ॥ करताके
 हेरनकीन ॥ ९ ॥ यावीधकेत्यावीकनीज ॥ कर
 ताकेवलछेक ॥ सोपतीचीनपरेवीनु ॥ पायन
 परमववेका ॥ १० ॥ जीनकीपेजपरमपर ॥ चाल
 तसकलसुछंद ॥ करतकेलकहीकालकी
 भरीतसहीतज्ञानंद ॥ ११ ॥ ज्ञानंदतीनप्रकार
 के ॥ तायसुनावुहम्मम ॥ भजनानंदवीसीया
 नन ॥ बुंज्ञानंदहेक्रम ॥ १२ ॥ वीसीयानंदवही
 तलजग ॥ भजनानंदहरीदास ॥ बुंज्ञानंदके
 हेबुंज्ञानसी ॥ पोतेस्वयंप्रकास ॥ १३ ॥ तेहीनीज

॥ ३५ ॥ स्वयंप्रकाशके ॥ राखत उर अमीमांन ॥ जीनरप
 तके दोसती ॥ नरपतनहीनीदांन ॥ १४ ॥ लोबु
 ला असमीयनके ॥ कहनहारनहीबुल ॥ सक
 लकर्मकरतायका ॥ वरथाकहेहेक्रम ॥ १५ ॥ कु
 कर्मकरतांनवडरे ॥ असमीधरीउमेदा ॥ अ
 तरगतउत्तमतपणे ॥ गणतनवीधीनरेवद ॥ १६
 समरणकेहेनुनवकरे ॥ आपेथेअदेत ॥ वहेव
 चनवेदांतने ॥ नीजगमत्यायनलहीत ॥ १७ ॥ जो
 नीजत्यायलहेगम ॥ जमथेतमतनुमांहांय ॥
 तोअत्यज्ञेआपछे ॥ आयअंतगतीनांहांय ॥ १८ ॥
 ओरलहतनहीमधकी ॥ जेहीविचरततनुहाल
 वरधहांणकेसुखदुःख ॥ होणीआजकेकाल ॥
 १९ ॥ पुनीलहतनहीओरनकी ॥ तंनतंनकीभी
 नभीन ॥ अखीलाबुलखलकतणी ॥ गतीपरत
 नहीचीन ॥ २० ॥ जोकेहेसोहंमकुभये ॥ आवृण
 सेअज्ञान ॥ नहीतरतोहसतंतर ॥ अंतररही
 नीदांन ॥ २१ ॥ एसीजोकोहोतोसुने ॥ कहदृष्ट
 तअनुप ॥ जेहीवीधीसेतुमकुपरे ॥ जीनकीसक
 लजनुप ॥ २२ ॥ जोकोईपुरसपटंतरे ॥ एकअंग
 तीनुताय ॥ बाहरकेएकतायकी ॥ पटकेनहीवी
 सराय ॥ २३ ॥ बाहरतंतनओरुपटनके ॥ एकता

झांनसतंत ॥ जो जो चीत वेवा हेरके ॥ सोपटी लहे
 मतंत ॥ २७ ॥ तेही वीधी तंम पटके तनु ॥ बाहर
 बुंलके अंग ॥ तीनके चीत वंन की तमु ॥ कपौ नही
 सम ऊसु चंग ॥ २८ ॥ अबती नके चीत वन कह
 जीनु गती अ पंर पार ॥ वी वीधी भात भीत भीतर
 चे ॥ जीनु आस कलय सार ॥ २९ ॥ ओर लहत हे
 सबन की ॥ अंतरगत की एह ॥ खान पांन जीन
 कुजे ही ॥ तेही सकल कुदेह ॥ ३० ॥ एसे जो तुम दे
 शको ॥ होहु सब घटके जांण ॥ ती बुंल आसमीके
 हो ॥ नही तर रहो अजांण ॥ ३१ ॥ पण तुम सेती
 नाबने ॥ अवीगत कीगत कोय ॥ सोम ततो करे
 चाहे सो ॥ पण तुम से कौ होय ॥ ३२ ॥ एही वीधके
 अगनांन से ॥ कहत मुखेहु बुंल ॥ अलय से सर
 वगके हे ॥ एमोठो अधरम ॥ ३३ ॥ जीनु चीत वंन
 से जुग भये ॥ ओर रगरगके जांण ॥ तीनकी सर
 र भरतायतु ॥ कौं करी अधम अजांण ॥ ३४ ॥ सर
 र भर करे जोतायकी ॥ सुणतीनकीगत सोय ॥
 सोले अचरत जीनेकीया ॥ कही सम ऊबुह मोय
 ३५ ॥ तीनमे जो तुम सेबने ॥ कही अचरत तंत ॥
 जो नाबने तो लही सके ॥ तदपी तोय मां हंत ॥ ३६ ॥
 लहीनसके तुम ही जवी ॥ तो न लहो की रतार ॥ ज

॥ आ ॥

॥ ३६ ॥

बकरननकी क्योबने ॥ तुम तो कहं नईया ॥ ३६ ॥
केहेनेकी पणकलनही ॥ जेही वीधी रचेरचाण
तो तुमसेती क्पा कह ॥ जीनके उतेपीयांण ॥ ३५ ॥
ती श्री अचरत सागर ग्रंथे त्रीतीयो कंद ॥ ३ ॥ षट्दश
आश्ररी ये देखावंत को ॥ सोले अचरत संचकी सु
णातां खुले कपाटा ॥ तुम कुसमऊ परे असी ॥ बाव
जबके अटाटा ॥ ततवर हो सुणावातेही ॥ रहो व
चनची तलाय ॥ कृताकी नजेही अचरत ॥ सक
ल सुनावुहताय ॥ २ ॥ अवीगतसे गत नभकीये
जीनके शब्द आकरा ॥ शब्दुसे सपर सभये ॥
जिनत्ये अगत्य पसार ॥ ३ ॥ अगती तत्वसे अप
भये ॥ अपते अवनती रूप ॥ एही सबपजा अरु
पकी ॥ क्यो करी कीये स्वरूप ॥ ४ ॥ अरसपर सए
क एकनसे ॥ पसरन करन परम ॥ बोहोरुलीन
करेतेही वीधी ॥ मोटो अदभुत मरम ॥ ५ ॥ अरुपे
सरुप समावत ॥ छेवट कल्प जंत ॥ पुनही रच
ततेही तेहनसे ॥ जीनकी शक्ती अनंत ॥ ६ ॥ पंचत
त्व जीन कुनही ॥ नही गुण ईडी माय ॥ दीव्य देह
एतने बीनु ॥ एही अकरत गतीताय ॥ ७ ॥ एसेती
रमलतंन मही ॥ कांहांया एही सबकोय ॥ बीनुर
कमनसे सबकीया ॥ पथमो अचरत सोय ॥ ८ ॥

एही सब अस्वील उपाधकु। एही नमै करे समेट
 सब तछु पाई अरु यमे। कपस कलकु मेट। ए
 पेतो तत्वा तीत। अवी गत देह अतंत। कवन देश
 ते लाये हु। ए सब डुर घटतंत। १०। प्रगट करे तां हो
 नही हुते। तही पुनी आपनी पास। को हो कां हो स
 उपजावत। एको ई अ कल वीलास। ११। अ कल
 वीलास करन जीनु। कीनु तपावही भेदा। एही
 अचरत ही तीयो पुनी। कौं नने ती के हे वेदा। १२
 विद्वदी त ईत की सबे। चीत की करी चराक। उ
 पजे कु अरथावत। नीय जे तां हां नही तां क। १३
 वीनु चीत से चीत वन जीनु। इ ए द्र ए सहोय
 एही मरम मसरी त अती। त्र तीयो अचरत प्रो
 य। १४। एही त्रि ये अचरत की कथा। जथा लहे ज
 न कोय। क्रता की ये सो ही क्रतन कु। अती अप
 इ म के हे सोय। १५। इ ए ते ही पण ती र मल। म
 ल वीनु अ मल अ खंड। ती नमै कां हां छुपा हु से
 कोटी कपी ड बुं लांड। १६। त व ते ती नमै नही हुती
 एही सब अस्वील उपाध। अ कली तरची अचा
 नक। एही अचरत चौं माहाय। १७। वीनु देखे वी
 नु अ वण ही। यथं मना ही क छुतंत। आपनी अ
 गम वी लोकीते। कीने ह घाट अनंत। १८। विवी

॥ आ० ॥ धीभातत्रेहेत्रेहेतरण ॥ कोहोकोउकलसेकीन
 प्रथकप्रथकभीनभीनभव ॥ अलगअलगत
 ॥ ३७ ॥ लुचीन ॥ १६ ॥ जलथलअगतपवनसुंत ॥ तांहां
 तनुकीयेतेहीवंत ॥ जांहांजमजीनुआतंदम
 ये ॥ पंचमोएहीअचरंत ॥ १७ ॥ थावरकुथीरताकी
 ये ॥ अरुशीरजंगमजंत ॥ एकमसालादोहनको
 धनवीगतवगुणावंत ॥ १८ ॥ वीगतवमेविगतव
 अती ॥ गतीसुक्ष्मगमसोय ॥ डालफुलफलपत्र
 ही ॥ फरकरंगसबकोय ॥ १९ ॥ पांडुपांणपमुख
 श्रवणही ॥ नैननासगुदताय ॥ प्रोरउपस्ततु
 चारुग ॥ अस्तमैसरोमछाय ॥ २० ॥ चंचुडसगार
 सनारस ॥ हरनखपुछनपंख ॥ एकबीडुकेचर
 तनु ॥ कुदरतकीनअसंख ॥ २१ ॥ मीएमधुर
 खटचरपर ॥ तीसुणफीकसवाद ॥ एहीअनुक
 रमकरनजीनु ॥ कुतकरहीपतीवाद ॥ २२ ॥ आ
 पआपनेहीसजातीमें ॥ न्यारेनीरतसभाव ॥
 तीनमेपणएकतानही ॥ चरजंगमकेभाव ॥
 २३ ॥ यावीधकीअवीगतगती ॥ करनजेहीकी
 रतार ॥ एहीअचरतवतअवतवी ॥ खटमोखे
 लअपार ॥ २४ ॥ एहीखटअचरतकोतीज ॥ देषो
 करीवीचार ॥ इनमेतुमसेक्याबने ॥ न्यारेकोईक

रनार ॥ २८ ॥ ओरुपुनीजेही चरअचरको कीयेह
 बीजअंकुर ॥ प्रथमपोखेह एकदुमे ॥ समलीत
 संचअपुर ॥ २९ ॥ जबीपुसवत एक एकतसे ॥
 अगणीतपुजाअनंत ॥ पारनपाही परंतको ॥ च
 कीतभये चीतवंत ॥ ३० ॥ थावरसेथावरवने जं
 गमसेहोयजंग ॥ चलेसकलपरनालीका ॥ अ
 वीरलधारआभंग ॥ ३१ ॥ बोहोरुकरनकुनव
 परे ॥ करताकुकथुकांय ॥ पोखेहकल्पजंतही
 एक एककेघटमाहोय ॥ ३२ ॥ यलजलचरअगनी
 चरा ॥ मारुतचरआकास ॥ जेहीजांहांजंमंतमठ
 पजत ॥ तनतनसेतनुतास ॥ ३३ ॥ हीरणभ्रभव
 तगतसबे ॥ चवतचतुर्दशलोक ॥ फरीतफरीत
 योंजुगभये ॥ एहीकृतकीयेहुअलोक ॥ ३४ ॥ गुण
 ईंदीअंतसकरण ॥ तत्वसहीतकुलतंत ॥ एकए
 कसेनीकसतबुह ॥ सरखासकलसमंत ॥ ३
 ५ ॥ तनकतनकबीजगमही ॥ भरेखलकनही
 अंत ॥ अजबकलाअवीरलगत ॥ अहीधंतम
 गवंत ॥ ३६ ॥ बीजगजलकीबीडुमें ॥ हाथपाव
 थाअंग ॥ कीतअंतरनही एकतये ॥ एकोईईल
 मउतंग ॥ ३७ ॥ तीरचतुरखटकुपके ॥ भरीतए
 कघटसोय ॥ कोहोकोईताराकरीसके ॥ जेही

॥ ३८ ॥ जीनकाहोयतोय ॥ ३८ ॥ लौंडीदशकुपही ॥ जीनु
 बीडुएकनीर ॥ जेहीजीनकात्पाराकीया ॥ चौवी
 शचीनसररीर ॥ ३९ ॥ तेहीकरननकेसाहुसे ॥ जी
 नकीजोबलीहार ॥ आनकोहनहीकरीसकेबी
 नकेवलकीरतार ॥ ४० ॥ चरबीजगकीएहीकही
 थावरएहीपरकार ॥ ओरसकलरजतजलहु
 एकहीसरजनहार ॥ ४१ ॥ आगेजोंजोंपांगरेसों
 पीछेपरसाय ॥ मधमधमेमाहालत ॥ जगनजुरा
 नवहीजाय ॥ ४२ ॥ योंकेतेकसमायेहु ॥ एकएक
 माहीअंतंत ॥ नीकसनीकसकरेतदीपसेतो
 हुनपावतअंत ॥ ४३ ॥ कहीनजातअवक्पाकहु
 अकलकलागतओय ॥ कोंकरीकीयेकतार
 ति ॥ एहीअचरतममसोय ॥ ४४ ॥ अरुठअवलभ
 लससमो ॥ अचरतकीनकराल ॥ परमपेचपरत
 सही ॥ देखोदहनीहाल ॥ ४५ ॥ एहीअचरतचौत्री
 येतरगो ॥ नरणीतकरोनरेस ॥ तवआपनपुनव
 धरो ॥ सीरपतीपरसपरेस ॥ ४६ ॥ अबकेअच
 रतअहमो ॥ सुनुहुसकलसभेव ॥ चक्रभेदस्व
 रसंधीत ॥ तीनकेकहुअहंमेव ॥ ४७ ॥ जेहीनीज
 पणवसकलघट ॥ स्वासोसासअबंध ॥ सरुये
 सरुपअरुपके ॥ कोंकरीकीयेसमंध ॥ ४८ ॥ जि

तनेभरजीवनलगे। तेतनेभरकेस्वास। रोम
 रोमरगरगमही। बंधेकरतवीलास। ४५। ज
 दीपहोयवीनुबंधन। तनमेस्वाससरोज। वही
 जातसबएकसमै। छलटेकुनपरोज। ५०। जोउ
 लटेकधुवतीहसे। तेहीनतायकछुजांण। वीन
 हुआंणअनुबंधन। कौंरहेपणवपराण। ५१। ते
 हीबंधनदरसावुह। सुनहोसकलसुसंत। च
 क्रचक्रसेजेहीवीधी। तंतेजुरेअतंत। ५२। सप्त
 कंदकेपणवही। जाग्रतवृक्षजुहर। छसेसेहे
 स्त्रएकवीसही। एतनेजीनकेमुर। ५३। ओरुत
 नसप्तसरोजमे। कुरेतंतएतनाय। जुहुपुस्य
 मकरंदके। जलकमलागतन्याय। ५४। जेहीतं
 ततनुचक्रके। कीयेपणवतरुकाड। तीनुमुर
 तेहीतंतसे। ग्रंथीदीयेघाहाड। ५५। पुनहीसक
 आकरसण। समलीतसप्तसरोज। छलटपुल
 टकरननदंम। रहीजीनुतेहीपरोज। ५६। एत
 नेकवजकरीरखे। तनमेस्वाससमीर। तद
 पीजायकपौंएकसमै। कहतधारणाधीर। ५७।
 चक्रतंतएकएकनसै। खटखटउठेपणाय। ५८।
 ससदाघटभीतर। जेहीधरणधडकाय। ५९। ओ
 रनाडकरकीपुती। वेदजुवतपुलकार। तेसेही

॥ अ ॥

॥ ३५ ॥

सप्तसरोजमे ॥ उठत एही प्रकार ॥ ५५ ॥ कोईक
समे काल जमही ॥ सुष्मदं मंदर संत ॥ सकलगे
रगत एही वीधी ॥ अनुचीत जाप जयंत ॥ ६० ॥ ओ
र जगे नही दरसही ॥ अस्तसही तजां हां भीम ॥
प्रसीध होय कौ परणव ॥ संकीरणव तयो म ६
१ ॥ अदर सदमकी नुग मनही ॥ जीनके कहस
सार ॥ सवाल हरवट से जीनु ॥ उठत चतुरहजार
६२ ॥ तेही खटदंम संचित एक ॥ महदपणव होय
सार ॥ उरधगतीनी कसत जेही ॥ नासावदुन
द्वार ॥ ६३ ॥ यों खटके एक पणवही ॥ सुनीयेता
यगनीत ॥ सप्तसप्ततीये से हे स्तर ॥ ओरुपटसे
उपरीत ॥ ६४ ॥ खटजपके एक पणवही ॥ खटसे
एकीहजार ॥ चक्रचक्र जेतना जये ॥ सुनीयो क
हुअनु सार ॥ ६५ ॥ बंसरुंदु अगुटीमही ॥ कंठक
मललुह सार ॥ तीनचक्रमहीतीनही ॥ उठतजा
पहजार ॥ ६६ ॥ हरदयेनाम उपस्तले ॥ खटखट
से हे स्त्रजपीत ॥ सुलचक्र खटसे पुनी ॥ गवरीपु
त्रसमीत ॥ ६७ ॥ जपतजाप जेही चक्रके ॥ कर
हीदान जीनु देव ॥ सावंत्रीपती श्रीपत ॥ उसया
पतमाहा देव ॥ ६८ ॥ विद्या अवीद्याकेपती ॥ कंठ
कमलदलजीव ॥ अगुटीसक्त बंसरुंदुमे ॥ जोती

परमसदेव ॥ ६८ ॥ कमलसप्तकेदेवही ॥ कीयेस
 कलसंकेत ॥ वीवीधीवीगतकरकाकहु ॥ जा
 एतसंतसवेत ॥ ७० ॥ एहीपरकारपुणवएक ॥ कर
 तसकलतनुसुल ॥ जडचहीतनएकतायका ॥
 जीनेकीयाअनुकुल ॥ ७१ ॥ तंतुतंतुगंथीदेई
 पुणवपीडकीयेएक ॥ जीनकेकरबारीकआ
 सें ॥ तीनकेसरीरकसेक ॥ ७२ ॥ अवीगतसुअ
 वीगतअती ॥ ममगतीगीयेहेराय ॥ एहीअच
 रतअतीअएमे ॥ कपोंकरीसुकसराय ॥ ७३ ॥
 अबकेकहनवमीतीध ॥ अचरतअरसअमी
 त ॥ जीनकेदलदरसाबुह ॥ नीरसतकेवीनुवीत
 ७४ ॥ तीराकारतीजनभतसे ॥ अअघटाघनहो
 य ॥ नीरवीडुतग्रजनाजीनु ॥ सहीतभईतकत
 सोय ॥ ७५ ॥ पाडुपाणमुषअवणही ॥ निननासवी
 नुवेश ॥ परवरतहीउपजापीछे ॥ जावहीदेशव
 देश ॥ ७६ ॥ ईछापरेतोबरसही ॥ नहीतररहेअ
 चुन ॥ बीनसीजायजांहांकेतोहां ॥ फेरीसुनके
 सुन ॥ ७७ ॥ कीतजामनजमाईये ॥ बीखरेकुंनअ
 मान ॥ कुनसकसकरुणामये ॥ सरजनउभेस
 जाण ॥ ७८ ॥ जोकेहेसोरतुसेबने ॥ रतुकेकोक
 रनार ॥ कुनवस्तकांहांसेकीये ॥ आपेतोअविका

ते

॥ १९॥ लोकी कर्म ईडा दी का बरसावत घन सु
 ॥ २० ॥ सुरसही त ई दरन को करनहार को ई डर
 ॥ २१ ॥ जो कर रवी कणनाज को देई मसागत हा
 थ ॥ पणनही करत लबीज को ॥ बूथा कहन के
 एनाथ ॥ २२ ॥ तौ बीज गवत बादल ॥ तडीत न
 दल्लपसेत ॥ कर रवी कालवत ई डकु ॥ दीये हा
 थ घंन खेत ॥ २३ ॥ करत करं मत अन्न की ॥ त
 बतेर ही अवाज ॥ एही नवमो अचरत ममा जी
 निसजा एही साज ॥ २४ ॥ नव अचरत नरणा ई
 ये ॥ एक एक ते अकलीत ॥ सुरत घवे जो छे कमे
 तो चक्रीत होय चलीत ॥ २५ ॥ अब के कुह रवट
 चतुरमो ॥ अचरत अवीर लवांण ॥ जडतेन ओ
 रुनीज जीवन की जीन मे उभे अजांण ॥ २६ ॥ सो
 ही अजांण जनावुह ॥ सुनो सकल बंस वेत ॥ अ
 धीत के हेण की कही रहे ॥ कता सेती होय हेत ॥
 २७ ॥ पणसाची जो उर धरो ॥ आपुर रवी डराय ॥ उं
 भी बोलन जोत जो ॥ करता छे क सराय ॥ २८ ॥ सो
 करता करुण मये ॥ तीन के होतुं म अंस ॥ अहि
 त जो उर मे धरो ॥ नीज पती सुनी रवेंस ॥ २९ ॥ वै
 सन ही की होतो सुनो ॥ तुम हो कुन की वेंस ॥ बी
 नहु वेंस तो वेसकी ॥ केसे धरो अकेंस ॥ ३० ॥ क

रताकरे सोनाबने। ओरुनही तीनकी जांण।
 करणी करन कष्टुनापरे। तबतेबकोबकोण
 ६०। जबदेखो तीजन्यायकु। कही सुनवायेहु सो
 या। अबके प्रचरत प्रनुभवे। एकलगेके दोयु
 ६१। जीवअंश करतारके। घटघट परतेभी
 न। पण करताचीनेनही। उतरतेरहे आधी
 न। ६२। कोघरसे आयेहंम। पुनीजेघरहीजां
 न। अबकीहेतनमेमम। योगतसकलअयं
 न। ६३। करताकेपोंजांणीसके। पणनलहेनीज
 आप। आपलहेवीनुओरनके। वरथाकरेवी
 लाप। ६४। आपनपुजांणेनही। तोपरकेही
 अयंन। जोजो जपेसोरूपकु। रूपेसरनहीजां
 न। ६५। जोजो जपेसोकुनहे। ईष्टदेवजेहीजीति
 नामरूपतीनकीलहे। नामीपरनचीन। ६६।
 नामरूपतीनकीपण। गतीनजानतकोयरो
 मरोमघटअंदर। होणीहोयसोहोय। ६७। ओ
 रुअरबलकीनवलहे। तनत्यागतकेअंत। ज
 बतबजायअचानक। बुझाकीटपुजंत। ६८।
 वैदधनंतरंमरगये। जेथारगरगजांणप। आप
 जीवनकीनवलही। तनकेओहीअजांण। ६९।
 जोतसरोदेजोतहे। साचीजुठसमोय। माहाघ

॥ आ ॥ पुरस कहि लीकहे जीवन जाणत कोय ॥ १०० ॥
 ॥ ४१ ॥ सुरी नर मुनी जनपंडीत ॥ नरपत प्राय जोहां
 न ॥ गियापी छे नववाहावडे ॥ एकोई घोर भयांत ॥
 १ ॥ जे जीनकी करणी जंम ॥ तेही तीन काफल पा
 य ॥ तीतकी ईतको उनवलहे ॥ मोहोगम माहाल
 सदाय ॥ २ ॥ बंलसुदन कैलासही ॥ वैकुंठ ओरु
 गोलोक ॥ अवधपर तेही बनसही ॥ सोनही अ
 मरलोक ॥ ३ ॥ यांहां लुसो मरतलोकही ॥ आभ
 वकी कुनमात ॥ आंहां वांहां सब एकसां रवा
 तो अदकी कुनवात ॥ ४ ॥ जबते आंहां के तांहां
 मरो ॥ सुवापी छे कांहां जाय ॥ तेही जावनकी अ
 दबद कोही कीनसे कहि जाय ॥ ५ ॥ जो केहे तोत्री
 ये लोकसु ॥ जांहां लग मरतक काय ॥ सोई आगे
 हंम कहि गये ॥ भरमी कभे दबताय ॥ ६ ॥ जो बंलसु
 असमी केहे ॥ वेद अंत के ज्ञान ॥ तेही नलहे अंत
 कालकी ॥ को हंम कीतसे ज्ञान ॥ ७ ॥ जांणे तो व्या
 पक वीत ॥ जीवन मुक्तको मान ॥ पण जीनके वी
 त व्यापक ॥ तीनके एही अजाण ॥ ८ ॥ रेहेणी करणी
 सेकहे ॥ उभये करके ईश ॥ पण अंतर अज्ञानही ॥
 जीवको वसवावीस ॥ ९ ॥ करणी करे सोदासेह
 जावत हरी हजुर ॥ तो करणी सेकौ कहो ॥ ईश्वर

भवकेसुर॥११०॥उतंममधंमकरनकी॥इस
 कुनहीजरु॥एतोअंसवीसेसही॥रेहेवनक
 ताहजुर॥११॥सांमरतकुकरणीकसी॥जेहीजु
 गतारनहार॥वीनकरणीजांहांतांहांभये॥ह
 रीकेदशअवतार॥१२॥सांमरतदेपरकारके
 सुनोतायकेमरम॥एककरमकरकेहवे॥ए
 कसदाहेक्रम॥१३॥करमेहवेसोदासहेजी
 वसांमांनसमोय॥हेकरमीनीजअंसहे॥वीसे
 सवीरलाकोय॥१४॥तीनकुकरणीहुकमकी
 पठवावनकीसोय॥करेसोहीवकसीसकी
 बोहोरकरतनहीकोय॥१५॥जोवकसाअद
 कीकरे॥नीजपतीपरमरीसाय॥अत्ममोजघु
 नेगारमे॥खुदकुकोबीसराय॥१६॥तबतेअ
 वतारादीक॥नीजपतीदाससहाच॥करतास
 हेनअकरत॥दिवेतुरततमाच॥१७॥रामनकु
 रावणदुखे॥अस्यपारधीबांण॥कायककरी
 अदकाईके॥देखोएहीनीरवांण॥१८॥दासन
 कुकरणीभली॥पावननीजकरतार॥जेतेभर
 बंसज्ञानीया॥वाचकवीनुभरथार॥१९॥यांहां
 सुसोअज्ञानही॥नीजपतीओरुआपनीया॥वी
 सेसकुवरजीतधरी॥ओरसकलसबकोय॥२०

॥ आ०

॥ ४२ ॥

जे अज्ञानी आपन पु॥ नीज कुल खेत लोई॥ तो
को लहे॥ उत इति नकी॥ भवके भरम समो य॥ २१
जे ही जे ही भरम कीया एही॥ जी तु जग जीव अ
जांण॥ एही अचरत खट पंचमो॥ कोड कुन ही
पेहे चांण॥ २२॥ अबके द्वादश मो कहं॥ अचरत
अदभुत अंग॥ आद्य अंत मधुकी मही॥ खडत
खरुडे अडंग॥ २३॥ जमी असमांत अधर सदा
पंचतत्वके पै॥ सेस सही तदा डुरकष॥ आद्ये
अधर रहेड॥ २४॥ वीतटे के कीतधारणे॥ ए सब
नाटक धोर॥ जुगन जुगन कही कालके॥ वरीर
हे एक गोर॥ २५॥ सक्ती आकर सरणसे॥ कोई
के हे रहे जमाय॥ कुनतत्वकी तेहसे॥ घोमोई
भेद बताय॥ २६॥ करनहारतीनके कोहो॥ र
कमकांहां सेलाय॥ अरु लआसे अटपटो॥ को
हमर मन ही पाय॥ २७॥ ज्ञानी ध्यांती धर सबे
वेदंती वी देवत॥ यांहां नही लाग लगे कीनु॥ स
बकी द्रष्टयकेत॥ २८॥ कहनहार हंम बुंलहे॥ ते
ही तांहां पांमेहार॥ उभये खट अचरत एही॥ ल
हेन वीन करतार॥ २९॥ कहत सुनोद सत्रीये
तणे॥ करम भरम अनुसार॥ जे ही अचरत मे
आवत॥ अंदाधुं दुअपार॥ ३०॥ जीव करत हेक

रमकु जेही पापके युंन्या ॥ जलमदुसरेताहीको
 जोगमेलावतकुरा ॥ ३१ ॥ करनहारनहीजात
 त ॥ करीयाकरमअचेत ॥ उभयेकुअनुभव
 नही ॥ कोहेतीनकुदेत ॥ ३२ ॥ हुनीयांमेयोंक
 हतही ॥ गतीपुराणपराया ॥ वीधीलखतहेलेष
 ही ॥ जोगमेलावतमाया ॥ ३३ ॥ मायाभीतो जडके
 हे ॥ ज्ञानीसकलसकोया ॥ जीवअचेतकरमज
 ड ॥ जडजडसेक्याहोय ॥ ३४ ॥ जोनाभुगतेकर
 मकु ॥ ताहीकरेकोहोकुंत ॥ उतंममध्यमचा
 हकी ॥ वरतीहोयअधुरा ॥ ३५ ॥ पुनहीसुनोव
 धितायकी ॥ केतीकलखेअनेक ॥ उदेअस्तले
 जीवकी ॥ अंतनआवतशेक ॥ ३६ ॥ लखनहा
 रकेसीरकीने ॥ लखीयालेखलखंन ॥ तीबुआ
 येसबजीवके ॥ लखनहारकोईआंन ॥ ३७ ॥ अ
 न्यकहीतीनकीतांहां ॥ आंहांकीकहीसुनाय
 जीवकरमके ॥ संजम ॥ कारंनकोहनपाय ॥
 ३८ ॥ ओलगोलगतगरभीत ॥ आवतजकपसा
 य ॥ आयअंतकीमध्यमे ॥ उतपतथायवीलाय
 ३९ ॥ हालहोयतीनकीलखें ॥ फेरउपजेतीनु
 तांहांया ॥ बीचअंधेरी ॥ सबनकुकीउकीनुसु
 फतनांहांया ॥ ४० ॥ जलमेतांहांआवीलगे ॥ कर

आ॥ मकरं होय पीछे अंधे कुज डजाय के। मले कुन
 की ईछे ॥४१॥ अंधे अंध अनाय के जीव कर्म
 ॥४३॥ उभयेव। एही अचरत खट सप्तमो। अनुगत
 वरत सबेव ॥४२॥ त्रिये दश अचरत की कही
 वी गती सकल सुनाय। अब के कह दश चतुर
 तो। चीत वी ज्यो चित वाय ॥४३॥ आभव के तेक
 दी नहुते। रचे हुसे की रतार। बो हो रुर चही ते
 ही कां हां लगे। जीन के वारन पार ॥४४॥ के तेक
 कलप वी ते हुसे। के ते कही बुं लाय। अब के तेक
 ही वी तही। करी त वनी ज करताय ॥४५॥ आ
 घु अंत एही दो हुं न की। वी धी लहत नही विद। सो
 रन की गत ती कसी। जीन के अलप उछे द ॥
 ४६॥ अ व्या क्रत जीनु अवीन वे। पुर सन पाव
 ही पार। ने ती ने ती सब की जां हां। वीनु जंतर
 रचना र ॥४७॥ को हुन था जीन की कने। मं
 ड्या जद मंडां ला। एही अचरत खट अष्टमो। त
 बते सकल अजां ला ॥४८॥ अचरत एही अ
 पार को। सुन सप्तमो वड सोय। लगे नही दृशं
 तही। या वी नते की लुकोय ॥४९॥ जे ही अच
 रत दश पंचमो। नी जमे रहत अचंत। ती न कु
 जी जांणी सके। को र्क ज वं र ला संत ॥५०॥ ते

ही संत करतार के ॥ संघी सदा हमे स ॥ बुक
 लखी होय पती नसे ॥ तिही जाये जी नुदेश ॥ ५
 १ ॥ आतन माही चतुर रहे ॥ मन बुध चीत अ
 हंकार ॥ क्रीया हुते जाणत सबे ॥ जीन का कुन
 देदार ॥ ५२ ॥ मन की करीया संकल्प ॥ बुध घ
 डत जेही घाटा ॥ परले करत अहंकार ही ॥ अ
 सुक अंध वत नाटा ॥ ५३ ॥ स्वांती करे सकल
 चीत ॥ वीत को रहे वी भासा ॥ अंधकार अहंकार
 के ॥ समर स होय समास ॥ ५४ ॥ संकल्प ते जा
 गत फुरे ॥ सुपने घाट घुडंत ॥ परले करे स सोप
 ती ॥ दर सत नही कछु तंत ॥ ५५ ॥ तुरी अवस्ता
 स्वांतसे ॥ चीत नीर वृत्त रहेत ॥ अंत सक्रण क्री
 या जीनु ॥ कहीत अवस्ता सेत ॥ ५६ ॥ जाग्रत मे
 हुकमी मन ॥ ईडी आद्य नरे स ॥ एकल अमल
 अचर चर ॥ जीन को पर स परे स ॥ ५७ ॥ बुध ची
 त ओरु अहंकार ही ॥ वरते थ ईदी वान ॥ परक
 रती की को गणे ॥ ऐसे तये सहंन ॥ ५८ ॥ एही
 परकार चतुर दश ॥ लोक मही नीर वांण ॥ जा
 गत जाग्रत मे जीनु ॥ फरत मनु की आंण ॥ ५९
 राजा राज करत मने ॥ रहीत दीवाण समेत दे
 वदनु ज अवतार खुं ॥ वीचरत मन के हेत ॥ ६० ॥

जीवसहीतजेतनेतनु॥ अणनी प्राद्यभ्रंमांड॥
 हलणचलणसबमनवडे॥ जेतनेभरभवभंड
 ६१॥ मंनअगवाहेअंशके॥ मनहेकुनकाअंश
 करीयाकाजकरमलगे॥ सरवत्तेसरवैस॥ ६२
 चेतनसेचेतनयशी॥ तननावनकेकीर॥ बुरीभ
 लीकीलेतहे॥ अपनेसीरतकसीर॥ ६३॥ सबके
 घटघटमेरमे॥ प्राद्यकीलहुअंत॥ केहुनपर
 स्वततायकु॥ केसाउनकातंत॥ ६४॥ कुनतत्वके
 मनकीया॥ कांहांसेउपजेसार॥ तेहेकीतकरो
 सकलजन॥ मनकाकुनआकार॥ ६५॥ सरीप
 तसेनहीमनभये॥ बुलासेनमाहेस॥ सोभीवी
 चरतमनवडे॥ मनकासकलसेभस॥ ६६॥ ती
 नकामनकीनकाहुसे॥ उतपतसक्रसमेत
 जीनकीप्राद्यसकलइति॥ मनकेकीयेसखे
 त॥ ६७॥ तीनकेमरमनपावत॥ रहतसदाजे
 हीलाहार॥ तोतुमहीकेसेलहो॥ नीजपतीस
 रजनहार॥ ६८॥ मंनअतसतोकरणहेचहीत
 नभुजहथीयार॥ जिसेडंडकुलालके॥ साणसाह
 यलुहार॥ ६९॥ तेहीजाणतेहतेहुनकी॥ लुहा
 काएकीहोय॥ त्योमनकीकरतालहे॥ जीनेकी
 याहोयसोय॥ ७०॥ मनमनकुनहीजानत॥ मे

राकवुनसरीर॥ एहीअचरतनव प्र१०॥ कीउ
 कुनहीततवीर॥ ११॥ खटदशअचरतकुअव॥
 सुणवारहोसचेत॥ महागंभीरगतउचरहुंक्र
 ताअंसतुमहेत॥ १२॥ गुणईडीअंतसवीनुपो
 तेयरमपराय॥ आपत्येअंशकारनजीनु॥ पीछे
 दीयेवनाय॥ १३॥ अंसपुरसप्रक्रतीधुनी॥ बुंहा
 वीसनमाहेस॥ ओरसकलसबजीवही॥ मुनी
 जनसुरसुरेस॥ १४॥ दियासबनरातनेयकुत
 नकेसाजसजंत॥ अधीकतुनविविधीविधु॥ जी
 नकाजेसातंत॥ १५॥ जेतनेअंसवीसेसही॥ ती
 नेदीयातेहीमाप॥ ओरसकलसबअंसकु॥
 जेहीचराचरव्याप॥ १६॥ एहीपरकारनजीवत
 कु॥ दीयेसकलतनुसाज॥ गुणईडीअंतसक्र
 ण॥ तत्वसहीतमहारज॥ १७॥ परकेदीयेप्रभा
 वीक॥ ओरकेमेहेलसमांत॥ नीजरचनारन
 संचकु॥ वसुनारननहीजांत॥ १८॥ तबततम
 तकीकोलहे॥ नीजकेकीयाविनाय॥ सकल
 अंसकुपरतनु॥ जीनकेवसेवसाय॥ १९॥ ई
 डीवीनईडीकीये॥ वीनगुणसेगुणसार॥ वीन
 अंतसजीनेमनकीया॥ कुनसेकरीविचार॥
 १८०॥ वीनुविचारजीनुसंकल्पे॥ कीयेसकल

॥ ७३ ॥ सबतंत ॥ संसनकुआवणधरी ॥ आपेरहेअतं
 त ॥ ७४ ॥ संकल्पतोमनत्येहवे ॥ सोतोमननहीता
 ॥ ७५ ॥ या ॥ तीसंकल्पकेसेबने ॥ आवतनहीचीतत्याय
 ॥ ७६ ॥ तीनकेलक्षलखावुह ॥ ज्ञातासुनोगनेह
 मनअंतसवीनुसंकल्प ॥ जीनकेदेहवदेह ॥
 ७७ ॥ मनतीसंकल्पवीकल्प ॥ उभेसहीतअनुरा
 ग ॥ संकल्पतेउदभवकरे ॥ वीकल्पतेहोयत्या
 ग ॥ ७८ ॥ तबलेमनकेसंकल्पे ॥ करतनहोयप्र
 कास ॥ सांमृतवीनसंकल्पनसे ॥ पीछेकरेवी
 नास ॥ ७९ ॥ नीजपतीकेसंकल्पजेही ॥ विक
 लपरहीतअकेल ॥ ईछंतातुरतहीबने ॥ कल्पो
 कल्पसखेल ॥ ८० ॥ नास्तीकरेतोसंकल्पे ॥ को
 र्कालेकल्पंत ॥ वीकल्पसोकेसेधरे ॥ जीनका
 कीयाहोवंत ॥ ८१ ॥ सुरपणसंकल्पमही ॥ वी
 कल्पकाहेरसोय ॥ अणसांमृतकोआदरक
 ताकरेनहीकोय ॥ ८२ ॥ नीद्राकालसकलत
 नु ॥ समदंमहोयसमाध ॥ जदपीलगेससोप
 ती ॥ रहतनकेछुउपाध ॥ ८३ ॥ मनबुधलीनस
 सोपती ॥ आपनाआपरहाय ॥ सोआपनासे
 कोउकछु ॥ तरणनहालेताय ॥ ८४ ॥ तोगुणई
 डीमनवीन ॥ करताकुहकीयेह ॥ नवखटस

चरतकोजेही। पतीपदअचरतएह॥५१॥ एही
 सोलेअचरतनीज॥ माहागतघेहेरगंभीर। स
 रसतीसुरनीगमादीक। कोहुनपावहीतीर॥
 ५२॥ ईतीश्रीअचरतसागरग्रंथचतुरथोकंद॥
 शिवरीयेअस्मीबुंलअभावदेखावंनअंग॥ झांनीसु
 नीसुरकवी॥ सोमत्तईसअवतार॥ तेहुनजान
 ततदवत॥ एसेअपरंपार॥ १॥ सोनीजपारप
 येवीनु॥ केहेहंमबुंहाकार॥ तीनकीगनतीकां
 हांलगे॥ उनमतकीयेउचार॥ २॥ उनमतकोही
 तोभलकहो॥ पणनहीक्रतासहेदाअत्मनेसु
 ननारमे॥ कुनलगावतरवोड॥ ३॥ जेजेअचर
 तकीअती॥ गतीलहेसोईसंत॥ नहीतरअल
 पलेसबे॥ बाजोभलेमांहांत॥ ४॥ गतीलहेतोको
 लहे॥ जीनकेअपरंमपार॥ अथाहयैनेयोकहे
 अर्हधंनकरतार॥ ५॥ एहीवीधीहारहरीथकी
 येनेकरेआराध॥ रखोसदासरणांगत॥ केहे
 सोकहीयेसाध॥ ६॥ पणअचरततीएनही
 सबत्येरहेसनात॥ जोअचरतइतिकेलेहेतो
 कुनचहेतीततात॥ ७॥ तातचहनकीतलब
 कुअचरतदीये॥ देखाय॥ तीनकुजेहीअवी
 लोकही॥ असमीईसनथाय॥ ८॥ ईसथयेकी

॥ आ ॥ पुरस कहि लीकहे जीवन जाणत कोय ॥ १०० ॥
 ॥ ४१ ॥ सुरी नर मुनी जनपंडीत ॥ नरपत प्राय जोहां
 न ॥ गियापी छे नववाहावडे ॥ एकोई घोर भयांत ॥
 १ ॥ जे जीनकी करणी जंम ॥ तेही तीन काफल पा
 य ॥ तीतकी ईतको उनवलहे ॥ मोहोगम माहाल
 सदाय ॥ २ ॥ बंलसुदन कैलासही ॥ वैकुंठ ओरु
 गोलोक ॥ अवधपर तेही बनसही ॥ सोनही अ
 मरलोक ॥ ३ ॥ यांहां लुसो मरतलोकही ॥ आभ
 वकी कुनमात ॥ आंहां वांहां सब एकसां रवा
 तो अदकी कुनवात ॥ ४ ॥ जबते आंहां के तांहां
 मरो ॥ सुवापी छे कांहां जाय ॥ तेही जावनकी अ
 दबद कोही कीनसे कहि जाय ॥ ५ ॥ जो केहे तोत्री
 ये लोकसु ॥ जांहां लग मरतक काय ॥ सोई आगे
 हंम कहि गये ॥ भरमी कभेदवताय ॥ ६ ॥ जो बंलसु
 असमी केहे ॥ वेद अंत के ज्ञान ॥ तेही नलहे अंत
 कालकी ॥ कोहंम कीतसे ज्ञान ॥ ७ ॥ जांणे तो व्या
 पकवीत ॥ जीवन मुक्तको मान ॥ पण जीनके वी
 त व्यापक ॥ तीनके एही अजाण ॥ ८ ॥ रेहेणी करणी
 सेकहे ॥ उभये करके ईश ॥ पण अंतर अज्ञानही ॥
 जीवको वसवावीस ॥ ९ ॥ करणी करे सोदासेह
 जावत हरी हजुर ॥ तो करणी सेकौ कहो ॥ ईश्वर

तुनीरगुणपदे॥ कथुनउपजतकोय॥ १५॥ तीनके
 सुनोसकलजन॥ कहइष्टंतसमोय॥ वीनुसंक
 ल्यसंकलपीनके॥ दरसपरहीपदोय॥ २०॥ तांडु
 लसालउभेजीनु॥ एकहीवस्तनीहाल॥ वीनघ
 लकायनतांडुल॥ छलकसहीतनीजसाल॥ २१॥
 सालीतेउदभवसंभवे॥ पसरनप्रजाअनेत॥
 तांडुलसेकथुनाबने॥ द्वीतियोतंतंत॥ २२॥
 तेसेहीनीरगुणबुंलसे॥ भवकोभवीतनहोय॥
 छलकावतसंकल्पनसे॥ कताकरतसबकोय
 २३॥ तांडुलसमनहीबुंलही॥ नीजकणवतसे
 सार॥ एकदेशीदृष्टंतसे॥ कीयेकतागतसार॥
 २४॥ सालद्रोहतांडुलबने॥ नीजपतीद्रोहन
 होय॥ बुंलप्रकासउपरछलो॥ कताबीचनही
 कोय॥ २५॥ कतातोएकअखंडीत॥ खंडीतके
 बुनहोय॥ आद्यअंतमधत्रीयेपदा॥ जीनुसंक
 ल्यतेसीय॥ २६॥ प्रथमपुरसप्रकतीगुण॥ अंत
 सकरणसमेत॥ वीवीधीतंतचरअचरलुं॥ सोसं
 कलेभवेत॥ २७॥ वीनुसंकल्पकेसेबने॥ एसब
 भवकेसेस॥ कतावीनाएहीकततके॥ कोउ
 नहुसरेदेस॥ २८॥ जोकेहेसोवीनुसंकल्पे॥ उ
 पजतआयोआप॥ तीनकेकहुदृष्टंतही॥ सस

॥ आ. ॥

॥ ४७ ॥

कोसकलत्रबाप ॥ २९ ॥ जों बीजगतेथावर ॥ उप
 जतजेही अंकुर ॥ पत्रफलफलकंदक ॥ होवतसे
 हेजसफुर ॥ ३० ॥ जेहीजीनकेबीजगमही ॥ हुते
 सोतीकसेआय ॥ बंबुरबोरनलागत ॥ अंबेआं
 कनथाय ॥ ३१ ॥ तबतोतुमेरेबुंलमे ॥ व्यापकभ
 रेवीकार ॥ ज्योंबीजगतेउदभवे ॥ त्योंहोवतसं
 सार ॥ ३२ ॥ सेहेजउपजकीएहीकही ॥ जोअंतर
 होयबाध ॥ तेहीउमडीआवतइति ॥ बीजवतन्याप
 उपाध ॥ ३३ ॥ जोकेहेसोखलुबुंलहे ॥ समलीतस
 हीतउपाध ॥ अलंकारवतजकही ॥ समतासक
 लअनाय ॥ ३४ ॥ एहीवीधसेकोहोतीसुनी ॥ अनी
 तसदाजेहीखेत ॥ उतपतपरलेपुनीजड ॥ ओर
 अज्ञानसमेत ॥ ३५ ॥ सीतोघटेनबुंलकु ॥ अगज
 डउपजनमेठ ॥ जोकोत्योंकेहेतेहीकही ॥ न्यावल
 गोनहीनेठ ॥ ३६ ॥ अबकेजेहीपरीउतरे ॥ पुष्पहु
 एकअबाप ॥ अलंकारकीतनेकीये ॥ तीनके
 देहुजबाप ॥ ३७ ॥ सेहेजउपजकीकेहेणसे ॥ बुंल
 मेलगेवीकार ॥ तौनीरगुणसेक्योंबने ॥ गुणके
 खलअपार ॥ ३८ ॥ जोकेहेसोईश्वरकीये ॥ ईसके
 कोकरतार ॥ अबकेत्यावनलागही ॥ बीनस
 तकीयेकृतार ॥ ३९ ॥ छोडहोसेहेजउपजमत

जीनसेबनेनरंच॥वीनकरताक्योंकरीहवे॥
 वीवीधीभातकेसंच॥४०॥सेहेजउपजतातो
 भलु॥संकल्पतेहोयसार॥परभारुपरभवक
 रो॥महीतो नहीवीकार॥४१॥तीनकेकहुदृष्टांत
 ही॥जीनमेसकलउकेल॥जोंकोईपुरसबना
 वत॥बाजीगरतटखेल॥४२॥मंतरतंतरसंक
 लपे॥सरपवीष्णोरुमोहोर॥तीनकीआद्य
 वीवीधीवीध॥उपजावतबुहुओर॥४३॥पणआ
 पनाथीअलगही॥सबवीधीकरेसफुर॥सर
 पवीष्णोरुमोहोरके॥जीनमेनहीअंकुर॥४
 ४॥जीकेहेसोतीनुजाएही॥अंतररहीमोकार
 तीनसेबाजीबाहर॥रचतविचारवीचार॥४५
 एहीवीधीकोहोतीनकीकहु॥मेरीसुनोसुवा
 ए॥खोडलगावतजांणकी॥जीहोयबुलअजां
 ण॥४६॥अजांणसेकछुनावने॥सुनसमोवड
 सार॥नीजपतीकृतासजांणहे॥सबवीधीसर
 जनहार॥४७॥सरजेहुसुधसंकल्पनसे॥ज्यों
 कोईघाटबनार॥संकल्पवतहथीयारसे॥घडे
 सोबाहारीवार॥४८॥ज्योंकरतानीजकरत
 ही॥संकल्पकेहथीयार॥ज्ञाननकेकरग्रहीत
 व॥उपजावतसंसार॥४९॥तीनकेसंकल्पमी

॥ आ. ॥ टनकु तु मेरी कृपा तगात ॥ ज्यों रंके नरपत्नी न
 की ॥ खेत न बने जगात ॥ ५० ॥ जब तु मेरे बंस ज्ञा
 ॥ ४८ ॥ नकी ॥ सो हो चन क्रता हजुर ॥ जों मारुत बबु
 राय की ॥ रब कुलगे नधुर ॥ ५१ ॥ तौ बंस ज्ञाने
 तेहनके ॥ संकल्प नही डुराय ॥ नेन मुदे तमते
 हुनकु ॥ रवी को ते जन जाय ॥ ५२ ॥ तेही वीधी तं
 मनही देखत ॥ नीज पती के क्रत कोय ॥ ससो
 पती जाग्रत लही ॥ मुदे ने न नीज सोय ॥ ५३ ॥ प
 णजी तुलगे न देखही ॥ ओर कु सब दर संत
 जदपी जगे तो तेहनकु ॥ दर से तं ते तं ॥ ५४ ॥ स
 सो पती तनु समज की ॥ तुमकु सुजन कोय ॥ अ
 रधमात्री का सुपन की ॥ ससो पती नीज सोय ॥
 ५५ ॥ तीनकी परतुरी या तं न ॥ जांहां कष्टु दर स
 न तं त ॥ उन मुनी जाग्रत आदीने ॥ आरुनी दाके
 अंत ॥ ५६ ॥ जेही अवस्ता त्रीये तण ॥ अनुचीत अं
 ग तु मेरा ॥ उन मुनी तुरी ससो पती ॥ मुदी आंख
 के हेरा ॥ ५७ ॥ तीनमे तुरी सो स्वांत की ॥ साक्षी क
 रण समैटा ॥ तांहां नही समज परेतुं म ॥ मुदी आं
 ख तेनेटा ॥ ५८ ॥ मुदी आंख अंधेरके ॥ सब वीधी
 ज्ञान तु मारा ॥ अंधेके अनुभव नको ॥ कैसे हो
 यनी रधारा ॥ ५९ ॥ अंधे अंध अनायके ॥ ससो प

तीकेज्ञान। नारीपुरसवीनातत। जीनकेक्या
 वीलांत॥६०॥ जबतुमनरनारीमही। नहीतो
 वींदलसमीय। तुमपतीपणतुमसारीखे। सुंत्स
 सुसकवतप्रोय॥६१॥ उभयेकुआनंदनही। प
 तीपतनीकोकोय। अवीलोकनमनकोजीनु
 अहीरसनावतप्रोय॥६२॥ तबतुमेरेबुंलज्ञान
 को। सुनवतलगेसकार। बोधकबोधनकोजेही
 सुणतलकुणगमार॥६३॥ प्रापेप्रापअचेतेमे
 दुसरवीनाकुणवेत। चतुरलक्षवेदांतकु। कथे
 सोकुनकेहेत॥६४॥ जौरणमेएकलजन। भूले
 गयेकुसेर। ओरवीनाउखटायके। लगवेकुणत
 सेर॥६५॥ ईतीश्रीअचरतसागरग्रंथपंचमोकांड
 पु॥ समाप्त। निजकरताअहेतकोहेतदरसावनसक
 जेतनेभरकुलन्यावही। हेतेलगेसथाप। न्याव
 वीनानीरसत्वके। सुखोप्रापोप्राप॥१॥ जोकेहेसो
 साक्षीयनकी। तीनकीनहीनवेंस॥ वींसवीना
 साक्षीकीनु। जांहांहेसकलवीधेस॥२॥ पुनही
 हेतदृष्टांतही। साक्षीनकोजेहीदीप। सकलते
 तपरकासक। रहतसदानरलेप॥३॥ पणनीज
 प्रापापरथको। जाणवीनाजडवंत। जौंतेचमक
 सतायते। लोहनकुचलीयंत॥४॥ सोहलहत

तअंग ६

॥ आ० ॥

॥ ४६ ॥

नहीचमककुचमकलहतनहीलोह॥ एसे
 जडअज्ञानको॥ कुणकामनरदोह॥ ५॥ आप
 परवीनुजांणसे॥ वीचरणवीवीधीवीचारान
 यंतायईडीयनको॥ जीनमेकीरखवार॥ धिनयं
 तायजोनवहवे॥ आभवकोजवीकोय॥ तोख
 टरतवरसमासही॥ उलटपुलटकेपोहोय॥ ७॥
 औररवीसस्यीउडघनगत॥ करतकालनीस
 दीन॥ नयंतायवीनुकौंरहे॥ तीजहददेवअधी
 न॥ पादीपकवतदृष्टांतसे॥ तुमैरेअखासीधांत
 करताकारवतावीनु॥ कुणकजसुसकसतंत
 हीतवमेरेपतीसकरत॥ घेवटसदनसथाप
 जीनकेसीरपरकोनही॥ सबकेआद्यअद्याप
 १०॥ तीनकेअंससकलमही॥ सगुणागुणघुण
 वेत॥ तिहीसाक्षीचरअचरस्यंतंतनप्रतेरहेत॥
 ११॥ सारअसारवीलोकंन॥ सहीतनयंताज्ञा
 न॥ ऐसेसाक्षीसोसद॥ सकतपदपरमांत॥ १२॥
 जोंराजनहंसीयारकी॥ रहीतसकलहसीयार
 कारणकेकारजमही॥ करीकेजुवोवीचार॥
 १३॥ तुमतोसाक्षीखुदकीये॥ जीनमेलगेनत्या
 व॥ हंमतोअंसकुकीये॥ तीनमेसकलसफाव
 १४॥ हमैरेखुदतीखलकत्ये॥ अलगथुकोअ

वीलोक ॥ सकलसाक्षीयनकोजेही ॥ साक्षीअ
 कलअलोक ॥ १५ ॥ जीनकुबाधलगतमहीए
 एतंनअगकोकोय ॥ तुमेरेतोअदीतमे ॥ एगे
 सीधांतेसोय ॥ १६ ॥ बोहोरुनलगेतोव्याभये
 दीपकवतकुत्ताय ॥ नयंतायनहीकोहंनके
 तोआपनेतीनुकांय ॥ १७ ॥ ऐसेनीरसतव्याप
 ही ॥ करताकरतवीनाय ॥ तोसुंनवादीनकु
 कीये ॥ श्रीयेपदकेसमताय ॥ १८ ॥ सोत्रीयेसु
 नअंधेरही ॥ प्रभासहीतनीरवैसा ॥ जबतोसा
 क्षीसंभवे ॥ सकरतसरजनअंसा ॥ १९ ॥ जेही
 जमजुवेजथारथ ॥ तीमतीनुदेतपताय ॥ दि
 पकवतनवकरीसके ॥ सकरतअंशवीनाय
 २० ॥ साक्षीसाख्यपुरतसवे ॥ जेहीजीनकीजं
 महीय ॥ पसनउचरतकोहकीती ॥ सकरतसा
 क्षीसोय ॥ २१ ॥ दीपकवतसाक्षीयनये ॥ पत्येन
 परमपसार ॥ मेत्येओरुपरआपनपु ॥ सकेन
 दीपसकार ॥ २२ ॥ एहीवीधीकेसाक्षीयनकु ॥ र
 हेसकलउरधार ॥ माहायमाहायकीएहीमम
 लहेनखुदकीरतार ॥ २३ ॥ खुदकीखुदीनमा
 लम ॥ जालमजोरजहीर ॥ छलज्ञानेछकीतल
 केहे ॥ हंमईश्वरजगहीर ॥ २४ ॥ छलज्ञाननजी

॥ ५० ॥ तमेजेही **॥** थपेनपदकीरतार **॥** व्यापकमेअन
 वेगती **॥** थीतीकरेएकतार **॥ २५ ॥** पणव्यापक
 करतानही **॥** अरसहीअटलठेकांत **॥** परमप
 काशसतंतर **॥** जीतकेअंसजांहांत **॥ २६ ॥** पर
 काससोपतीपरमके **॥** ताहीमरमनहीजांत
 अकरतमेएकताभई **॥** अहंपदधरेअजांत
२७ ॥ अकरतसोनवकरीसके **॥** एहीनीजन
 वीनवीलास **॥** तेहीकरननचीनेविसु **॥** सुन
 मेकरीतसमास **॥ २८ ॥** सुनसमोवडबुंलहे
 जेहीअकरतअनुसारा **॥** करतकधुनहीका
 रज **॥** बीहीरुनसुनेपोकार **॥ २९ ॥** तवेतस्वांग
 सजीकीनु **॥** भगुवाभेश्वभभुत **॥** तातनपुचन
 मातही **॥** तीनकेक्योभयेपुत **॥ ३० ॥** जोहृष्टतेक
 रीकहु **॥** आवुहुउतेसुनाव **॥** समऊपरेश्वरव
 गनही **॥** छेकसीधांतकेत्याव **॥ ३१ ॥** मृतकंचनम
 सरीअप **॥** यावतबुंलसतंत **॥** घाटवीश्ववीवी
 धीवीध **॥** जोताएकहीतंत **॥ ३२ ॥** आपिआपनउ
 पजत **॥** एचोहसेकीतघाटाकारजकारणसही
 तमाएसबजडकेगाव **॥ ३३ ॥** भंडकुलालीनसेव
 ने **॥** सोनाघाटसीतार **॥** जलकीलेहेरीपवनसे
 कंडुमीसरवनार **॥ ३४ ॥** तेसेसमेदंमबुंलसे

सबजगभयेपसार॥जोचतुरमकरताकीये॥
 ल्योभवकोकरनार॥३५॥तेहीकरतारनकीको
 हो॥सरजनसकलयसार॥जोतनीरंजनसक
 लु॥जेहीउपजावनहार॥३६॥तेहीउपजावंन
 कोतुंम॥मरमनजानतमाहाद्य॥सरगुणी
 रगुनपसके॥करनहारपतीपादा॥३७॥सरगु
 नसकलयदारथ॥ईश्वरभेदज्ञनेता॥पुरस
 आद्यप्रकृतीपुनी॥बुंसाकीटयुजंत॥३८॥ए
 तनेमेकछुनावने॥एसबभंडसमोय॥खुदके
 करतपसारन॥करनहारसबकीय॥३९॥त
 बज्ञानीकीतज्ञानसे॥ईश्वरआपसरंतपा
 संगीगीरपतगये॥महुराकुनगनेत॥४०॥ई
 श्वरीयेजेतनेभर॥धरधरदीयेलखाय॥जब
 तुमतोमहरंनसम॥गमकेसमनहीताय॥४
 १॥प्रबमेरेअनुभवनमे॥गवनकरीगतीसा
 र॥सुरतनुरतकरीदेखहो॥तबहीयतत्ववी
 चार॥४२॥तत्ववीचारनतेहनके॥धरीतहार
 मनमांहांय॥कताकीयेजीनमेकछु॥बनीस
 केतहीकांय॥४३॥सेहेरुबेरजरवमारीके॥
 बुंसाकहनकीसोय॥कीनेकहेवेदांतके॥हंम
 कुदोसकसोय॥४४॥एहीवीधीअतीअस्तुत

॥ आ.

॥ ५१

ही करत धर ही उर छेद ॥ अहो ममनाथ ती वाज
हु ॥ पावुह परम उमेद ॥ ४५ ॥ परम उमेद परम पती
सीर परसाहाय करंन ॥ होहु अनाथ सनाथ ही
तुम होतारंन तरंन ॥ ४६ ॥ पावत दल ही नता करी
मरी जीवत मन सेत ॥ परम क्रपाल परम पती ॥
गती कर ही धरी हेत ॥ ४७ ॥ नीज पती से नीर भेत
णो ॥ जदपी भये करारा ॥ तदपी तन मन उपर ॥ का
लन कर प करारा ॥ ४८ ॥ जवनी जपती करतार से
सुरत भए एक तार ॥ जनम मरन ती नकु जैसे
से हे ल करत जुग सार ॥ ४९ ॥ आवन जावन की
जीनु ॥ स्वाधीन से हे जस भेव ॥ तीत के ती नीज
दास ही ॥ इत देवन के देव ॥ ५० ॥ श्रीरुनी जपती के
अंस होई ॥ इत ईश्वर कहे सोय ॥ तो भी वचन प्रसा
ण है ॥ जीन के दोसन कोय ॥ ५१ ॥ ज्यौं नरपत पर
धांत ही ॥ धरत आप अ भी मांत ॥ पण नरपत कु
सीर धरी ॥ नी भे सो करी गुमांत ॥ ५२ ॥ पुनी जिता
ब्रह्मवी से सण ॥ तुम न ही तीन के अंश ॥ ईडी सक
लन पुचक ॥ को हो की तु प्रसवत वेस ॥ ५३ ॥ माटे
ब्रह्म करत के ॥ आपण अंस न होय ॥ गुण ईडी त
त्वा तीत ॥ ईश्वी ना की तु कोय ॥ ५४ ॥ तो ब्रह्म आप
ने का लगे ॥ जे ही स गुण तीत व्याप ॥ तीन के कुहुह

एतही ॥ देखुहुनें न अघाय ॥ ५६ ॥ जो रवी ते जय
 कासते ॥ द्वितीयो दीपनथाय ॥ जीन के व्यापस
 तंतर ॥ उदे अस्त लुताय ॥ ५७ ॥ पण दीन करण
 क देखीते ॥ चसमे चूकजरंत ॥ तो व्यापक सव
 देखकी ॥ अदके कुरण मतंत ॥ ५८ ॥ रवी चही तन
 दृष्टा परवे ॥ सकरत सां मत सोय ॥ प्रकास तो व्या
 पक पण ॥ चही तं न तान ही कोय ॥ ५९ ॥ वीनु चैत
 त दृष्टा परवे ॥ सकरत रही त अकाज ॥ जब लये दी
 पक ता यये ॥ जरे न सरे सकाज ॥ ६० ॥ ते से ही
 व्यापक बुल ही ॥ कैवल सुर परकास ॥ असने
 उपजत ता यये ॥ जो दीपन ही रवी भास ॥ ६१ ॥
 रवी चैतं न दृष्टा परवे ॥ तो कैवल की रतार ॥ प्रका
 सन ही दृष्टा परवे ॥ तो बंस सुन पसार ॥ ६२ ॥ तव
 ते नीज कैवल पती ॥ सकरत सर जनहार ॥ आ
 पन अंश हे ते हुन के ॥ न ही बंस सुन करतार
 ६३ ॥ अही क ओरु देता गती ॥ नीज पती वीनु
 वीलाय ॥ अंत सकल के अनुभव ॥ को उकीनु
 क्तान थाय ॥ ६४ ॥ एही सब आचार जन के
 की न मर मगती भेव ॥ जे ही जीत के अनुभव
 भव ॥ कारन कलीत सबेव ॥ ६५ ॥ अकरत प
 द ओरु ईश्वर ॥ जीन मे क्तान कोई ॥ वीनु क

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

रता क्रतु अरवीलके वीवीधी भात कपों होय ॥
६६ ॥ ते हुते सकल पसारन ॥ अणुनी आयु बहु
जात ॥ सकी सही तवी नु सरजन ॥ कथुन हो
त उद्योत ॥ ६७ ॥ जी नु अकरत प्रती पादन की
ये वी नु वारन पार ॥ सुन समो वडको सुने ॥ ज
नकी परम पोकार ॥ ६८ ॥ वी नु जन परम पोका
रकी ॥ सुने वी ना ज बी सोय ॥ ज्ञान भक्ती वैराग
की ॥ कष्ट सहें की नु कोय ॥ ६९ ॥ वी नु हत्या गवी
नु ज्ञान ही ॥ भक्ती वी ना भव मां हांय ॥ अत ही धी
रत मवतं सबे ॥ अंध दुंध जुग जां हांय ॥ ७० ॥ श्री
मंडल भर भोवन मे ॥ ज्ञान भक्ती वैराग ॥ करन
प्रकास सदो दीत ॥ ने न नी मखील उमाग ॥ ७१ ॥
तदपी बीज एही त्रीयन के ॥ दैत भो म उदयंत ॥
वी नु ह दैत अ दैत पदे ॥ की हो की नु कुन चीत वं
त ॥ ७२ ॥ वी नु चीत वंत पर आपन पु ॥ भी न भावत
व होय ॥ भी न भाव वी नु त्रीयंन के ॥ लाग लगत
न ही कोय ॥ ७३ ॥ तब मे रे गुरु परम के ॥ सकर
त अदीत संच ॥ तीत कारन ईत क्रत वी नु को
हुन त तीयो वंच ॥ ७४ ॥ जे ही कारन प्रथु परम
ही ॥ सकरत सां मरत सोय ॥ अवी लो क यु उत ई
त म ही ॥ आय अंत मध सोय ॥ ७५ ॥ पंचतत्व गुण

घणालुह। सुरसप्रकृतीसमेत। ब्रह्मपरंतुष्टेव
 ट। सोनीजक्रतासहेत। १६। नीसेनीजमत
 एहीमम। कारनक्रतासीधांत। तायवीनाअ
 नुभवसवे। नीरफलअंमउवरंत। १७। पढन
 पढावनउचरन। करनग्रंथअवीलांन। नीज
 जनकुमंगलीकसदा। क्रतासमंधीलांन। १८।
 ट। सोनीजमरमलहेवीनु। नीजपतीपद
 कीरताय। जीवचराचरअचरके। कोउकी
 नुमोक्षनपाय। १९। जदीपपरमगुरुपरम
 के। लायेहुमरममुदाय। नीजजनअतीअधी
 कारीकु। पावंनपरमसुधाय। २०। परमसु
 धापतीपरमके। मरममनोरथसारतेही
 खरववीनुगुरुपरमही। कोउनलखावंनहार
 २१। अरुजानगतीष्टेवट। परमगुरुअधीका
 र। सोष्टेवटकेवलपद। अचरतनीजकीरता
 र। २२। जेहीसकरताआयके। परमपुरातन
 पेड। तीनकीपरपतीकोईतही। कीतेहुसक
 लनवेड। २३। नीजनवेडकीयेहुमम। सुनोता
 यपरीमांत। जोंष्टेवटगतसुंनहे। तीनीजप
 तीनीरवांत। २४। नीजनभकेकरतानहीजे
 हीअपरंमअवीकास। ओरुतीनकेपरकोयन

॥ ५३ ॥ **आ॥** ही पुनीजीनकेनहीनास ॥ ८५ ॥ **ति॥** केवलस
 बकेपर ॥ **जो॥** नभकीयेअनाद्य ॥ **आ॥** यअंतस
 धवीखने ॥ **पो॥** तेपरमअघाद्य ॥ ८६ ॥ **प॥** एनभ
 तोसुंनवतसदा ॥ **अ॥** मयोअतीअवीकाशवा
 स्तवीकवस्तुतानही ॥ **फो॥** गठफरकफेलास
 ८७ ॥ **कर॥** नवादप्रतीवादीकु ॥ **सुं॥** नपणसुसक
 अनाद्य ॥ **त॥** वतेनीजकरतायकु ॥ **की॥** नेहुपरम
 अघाद्य ॥ ८८ ॥ **पर॥** मअघाद्यपरमपदतेहीनी
 जसदकीरतार ॥ **ओ॥** रसकलपदईतनके ॥ **उ॥** प
 जीतरखयेअपार ॥ ८९ ॥ **त॥** वतेसकलसमेटहो
 ओहीरलेपदअलुराग ॥ **मी॥** खनचाहोआपने
 पती ॥ **अ॥** दभुतकरोउमाग ॥ ९० ॥ **अ॥** दभुतसो
 अवीगतगती ॥ **नी॥** जपतीपरमआराध ॥ **ते॥** ही
 नीजमरमखखावही ॥ **पर॥** मगुरुपदमाहाद
 ९१ ॥ **पर॥** मगुरुपदमाहादके ॥ **स॥** करतसरससी
 धांत ॥ **जां॥** हांकछुदोसापतनही ॥ **को॥** टीकमध्ये
 मंतंत ॥ ९२ ॥ **स॥** कलसीधांतमंतंतके ॥ **ची॥** नली
 येहततसार ॥ **ते॥** हीसकलतीनकीपरो ॥ **सां॥** म
 तसरजनहार ॥ ९३ ॥ **जे॥** तेहीईडकटासही ॥ **म॥** ध
 केवलकीरतार ॥ **ती॥** नकेअनुभवकीआंहां ॥
 कोआवहीपतीयार ॥ ९४ ॥ **वी॥** नुपतीयारनके

पद द्रुताधरेनकोय॥वीनुदृताद्रुसजनही
 समरणसुरतनयोय॥१५॥तीनकेजेहीपरी
 माणही॥सुनोसकलजनसोय॥हस्तामल
 करीकेकहु॥संसेरहेनकोय॥१६॥इतीश्रीअ
 चरतसागरग्रंथपद्यमोकंदसमाप्त॥६॥अंशअंरी
 पददरसावंतकरतातीश्रीकोअंनीजपतीसजेस
 राजम॥पथंमदीव्यजेहीदेव॥तीनुअंसतनु
 आपनमे॥दरसावुहसभेव॥१॥सरीपतीअज
 भवसुरवर॥पुरससक्तीबुंलसेत॥अोरुके
 बलकरतारबुद॥जीनकेअंससमेत॥२॥सुन
 वासकलसचेतन॥हरखवंतुहसीयार॥हो
 हसरलगतसुधचीते॥तजीनेतरकवीकार
 ३॥समदरसेसोसमऊसो॥जेहीजेहीकहु
 कहाण॥तहीतरतोतुमरहीजसो॥तीजपती
 अंसअजाण॥४॥रजतमसावीकआपनमे
 जीनुषीसअंसेस॥हतेतोभासेभववीखे॥बुं
 लावीसनमाहेस॥५॥नेतरवीभुजसुरपत
 करणदेवद्दीगपाल॥रसनावरुणअगनमुष
 मारुततुचासमाल॥६॥नासाअस्वनीकुवा
 रक॥गुदगणपतअरुण॥ईडीअनेंगसहीत
 मरज॥उभेकरतअवीलांत॥७॥सतोचरनर

॥ आ ॥ वीसहीतम एहीदसनके देव। सुनमेहतेतोभा
 सेह। जीनकेसकलअवेव ॥ १० ॥ कहतअंशअ
 ॥ ५४ ॥ बपुरसके। सक्तीसहीतसमदाय ॥ अहंपद
 वतीउभयेतत ॥ जीनकेअंसपसाय ॥ ११ ॥ उँका
 रजेहीपणवही ॥ रहेसकलतनुधार ॥ रोमरी
 मरगरगमही ॥ जीनकेपबलपसार ॥ १२ ॥ बं
 लअंसतीनुहीरणीत ॥ उँबीजअंकुर ॥ तीजप
 तीपरमप्रकासके ॥ अंसैपणवसफुर ॥ १३ ॥ सु
 नकादीकनारदसुख ॥ संकरअाद्यसमेत ॥ नव
 जीगीदतअजगर ॥ भयेजीभवकेखेत ॥ १४ ॥ ती
 नकेसाधनप्रथमही ॥ पणवजापतेकेत ॥ तदाका
 रतदवतथरी ॥ भयेसकलबंसवेत ॥ १५ ॥ बंसअं
 सजोथासदा ॥ पणवजापमेसोय ॥ तबतीनुसाध
 नसेभये ॥ बंसजानीसबकोय ॥ १६ ॥ अबकेज्ञ
 तीसुखरके ॥ वाचालहीवीटंड ॥ ईश्वरताअण
 भरनही ॥ भवकरननकेभंड ॥ १७ ॥ सरवविनुव
 दीतवचनहसे ॥ भयेबंसअंभेर ॥ मीलेनअर
 वहसाबीकु ॥ जौकोडीनकेबेर ॥ १८ ॥ जेहीजेही
 लखतीनुसाधन ॥ प्रथमकीयेवीनुकोय ॥ ईश्व
 रताअनुभवनही ॥ वकेसोबुधकीबोहोय ॥ १९ ॥
 पुरसपुरानेप्रथमही ॥ साधनकीयेसवेत ॥ उल

देही प्रणवपुरीतघट ॥ जतमत राखी सकेत ॥ १८ ॥
 बंल अंसके गरभीत ॥ प्रणवपेच ऊँकार ॥ ती
 वके जतमत राखन ॥ कता अंसहु सीयार ॥ १९ ॥
 १८ ॥ जेही अंशनी जपती ॥ सब गती को गतीयार ॥
 जीन त्येक बज सकल कल ॥ सहीत संच ऊँकार ॥
 २० ॥ भेद अवस्ता जेहनये ॥ करत नही अंतराय
 अंत सकर गारही तवीत ॥ जीनु सुरत एकता
 य ॥ २१ ॥ सदचीद आनंदके जेही ॥ सहीत प्रणव
 पतजांण ॥ तीनके करता केवल ॥ अधर सीधा
 तपसांण ॥ २२ ॥ कोहन मरमलहे जीनु अक
 लीत अंस अंभेद ॥ अकरत पदके अनुभवी ॥
 पायन परम सभेद ॥ २३ ॥ जीनके पद अकर
 तबजे ॥ तीनके वैसत सेर ॥ आतो अंसकता
 रके ॥ ग्रहीत ज्ञान समसेर ॥ २४ ॥ साक्षी अंस
 न बंलके बुधावदत वीदवान ॥ अक्षरा तोलेहे
 तानथी ॥ जेसे बंलतीदान ॥ २५ ॥ जाणपण जी
 नमेकाहा ॥ सुनवत जीनु सभाव ॥ ओरु संकल
 रहीतम सम ॥ हृष्टादृष्टनकाव ॥ २६ ॥ साक्षीतां
 हांन संभवे ॥ जांहांनही आपन ओर ॥ ती साक्षी
 तेकेहनके ॥ नीरखन कुतही गीर ॥ २७ ॥ जांहांसा
 क्षीतां हां सबतर ॥ संकल ज्ञान सजांण ॥ एतां

नके

॥ ३१ ॥ शक्रतारको नही बंलके तीखांण ॥ २८ ॥ बंलस
 दापदप्रकरत ॥ ओरुनी रगुणनी रलेपा एतोय
॥ ३५ ॥ एघमसांणसे सबवीधीरचेरचेत ॥ २९ ॥ जेहीनी
 रगुणनी रलेपही ॥ तीरवेवैनरजीव ॥ तीनतेस
 कल्पदारथ ॥ क्योकरी होयसजीव ॥ ३० ॥ जोके
 हेसोसभराभरो ॥ जांहांघटतांहांबीचहोय ॥ ती
 नतेहोतसचेतन ॥ अकरतसेवीनुमीहोय ॥ ३१ ॥
 तवतो जडघटकीसबे ॥ आवतबंलमोका ॥ क
 रतनहीक्योचहीतन ॥ घडीतलघाटकुमाहार
॥ ३२ ॥ ओरधातघटकाएके ॥ काचनकेजेहीपांहांण
 तीनकेआंदरआवत ॥ एणनहीबोलतजांण ॥
३३ ॥ प्रकृतीपुरसगुणसहीतम ॥ जोकेहेसोघ
 टहोय ॥ तीनकीबीचआईतजीत ॥ बोलतबंल
 सतोय ॥ ३४ ॥ प्रकृतीपुरसगुणसहीतम ॥ संज
 मकोकरना ॥ बीनुसंकल्पकेसेबने ॥ बीवीधी
 भातघटसार ॥ ३५ ॥ जबतेनीजकरताकर ॥ संक
 ल्पजाणसमेत ॥ तीनेरचीकुलपुदगल ॥ अंसे
 कीयासचेत ॥ ३६ ॥ तवतेअंसक्रतारके ॥ साक्षी
 सबघटसोय ॥ सहीतज्ञानसंकल्पनसे ॥ बीच
 रतहेसबकोय ॥ ३७ ॥ जेहीसंकल्पीअंसनुहके
 संकल्पीक्रतासनात ॥ भासेदकारणक्रतमही

जोथा अंससजात ॥३८॥ पातेबुंलसीधांतके
 कृताकरतनहीदोय ॥ अंससजातीनजेहन
 के ॥ ब्याचीतकीतपोय ॥३९॥ तबतेनीजक
 रतापद ॥ सकलसीधांतसमे ॥ अंससजाती
 मीलेतीनु ॥ जीनकीबुकनबेरा ॥४०॥ देवअंस
 जेहीआपनमे ॥ हतेसोभासेआन ॥ कारजके
 कारंनजेही ॥ बसेतेहीअसमान ॥४१॥ पथीअ
 पतेजपवननभ ॥ माहाभूतकेजेहीअंशतेही
 पणआयेहुआपनमे ॥ थीरचरआद्यसेबंस
 ४२ ॥ पंचतत्वगुणघणसुर ॥ पुरसप्रकृतीस
 मेत ॥ सहीतअंसकरतारके ॥ बसेअचल
 कीनुखेत ॥४३॥ सुस्पओरुकारणमाहाप
 रमकारणजेहीदेह ॥ अजरअमरअवीचल
 तन ॥ अवीरहततीनुगेह ॥४४॥ युलविचरे
 बीछरतनही ॥ एचुहतंनयेअंस ॥ कोटीकल
 जुगजुगलहुं ॥ संघेसदारहंस ॥४५॥ जादीनमी
 लेकृतारकु ॥ अंसचतुरतनुत्याग ॥ देवअंशपण
 तेहीदीन ॥ लगीसोआपनेमाग ॥४६॥ कोटीक
 ल्यकेवीछरत ॥ अंसमीलेघरसोय ॥ तासुखकी
 मुखसेकधु ॥ बरनीसकुनहीकोय ॥४७॥ पोस
 देवपतीतनुहकी ॥ अंसवांतजीकीन ॥ पगट

। आ.

। ५६

पंडमेलखायेह हस्तामलजीनुचीन ॥ ४८ ॥
बकोउनवीतआचारज ॥ करीनसकेभवभ्रांत
अंसवीनाअंसीथये ॥ तोवरथाजीनुसीधांत ॥
४९ ॥ देवअंसतेदेवथये ॥ सोहीवचनवेदबाण
क्रताअंसकरनारकु ॥ थयेसोपदपरमांण ॥ ५० ॥
ओरधनेपरभावीक ॥ उरधणआद्यसुरेस ॥ तीन
केअंशतआपनमे ॥ अलपग्नेजीनुवेश ॥ ५१ ॥
नकेवरननलोकीक ॥ करनपरेजोकोय ॥ या
वरजंगमजलथल ॥ गणीतपणेगतओय ॥ ५२ ॥
वअंसकेआपनमे ॥ कीयेजेहीअरुण ॥ करत
काजतेहीतेहनके ॥ पणनहीज्ञाननीदांत ॥ ५३ ॥
बुलअंस ॐ कारमे ॥ तेहीपणजाणबेहन ॥ जद
पीलगेससोपती ॥ पणवरेहेतहेसुंत ॥ ५४ ॥ मन
बुधओरअहंकारही ॥ समेटनीजपतीअंस ॥
होयससोपतीमेसबे ॥ त्रीगुणकरतनीरवेश ॥
५५ ॥ तीनकीपरउभयेतंन ॥ साहाकारणओर
परम ॥ पुनहीअवस्तातेहनकी ॥ जाणालहेजेही
सरम ॥ ५६ ॥ जेहीअवस्तापंचके ॥ साक्षीसरल
सवेत ॥ क्रताअंशसीहीसाम्रत ॥ जेहीसवग्निस
चेत ॥ ५७ ॥ तेहीसचेतनकेपती ॥ अतहीसचेत
सदाय ॥ जीनकेसुधसंकल्पनसे ॥ पलमेकरे

सोचाहाय ॥ ५८ ॥ तीनुपणलगेवीसेसण ॥ सद
 चीदजोरुआनंद ॥ रहतअनाद्यनीरोधीत ॥ फं
 दथकोनीरबंध ॥ ५९ ॥ सदतोसदहांअस्तीक
 चीदज्ञाननमयसीय ॥ आनंदसदावीलासीक
 जीनुबंधननहीकोय ॥ ६० ॥ वीलासीपणसंकल्प
 हुते ॥ दुष्टारहीजोनार ॥ अंगीकृतनहीआपन
 मी ॥ असेकरेखेलार ॥ ६१ ॥ मेरेतोव्यावलगेए
 ही ॥ सकतपदपरमेश ॥ ओरसकलतीनकी
 परवारीधरुविदेश ॥ ६२ ॥ सकतकुलजीवअ
 सकेअएनीआद्यभवभेस ॥ अचरततेहीप
 दपायेहु ॥ परमगुरुउपदेश ॥ ६३ ॥ इतीश्रीअचरत
 सागरग्रंथससमोकंदसमाप्त ॥ ७ ॥ संतभक्तीरोम
 णीअधीकारीकोसकओरसंतहरीजनमही ॥ जीने
 एहीपदकेहेत ॥ परमगुरुपरवारेहुं ॥ तनमनस
 हीतसमेत ॥ १ ॥ तामहीअतहीउजागर ॥ तारन
 तरनपुरेस ॥ नामसुनावुहतायके ॥ जीनुनी
 जलक्षउरेस ॥ २ ॥ नारणदासनरगोकीये ॥ येस
 दासपुनीचीन ॥ आरतीदासअनवेगतीगु
 रुपदअपमनमीन ॥ ३ ॥ लालदासगोवर्द्धन ॥
 हंसदासहनुमान ॥ एहीचतुरगुरुपरमेके ॥
 आपेहसरननीदांन ॥ ४ ॥ ओरुसीगुरुपर

तसीधो
 तकुंद ॥
 ८

॥ आ ॥ मकेईछारंमजेहीसंत ॥ सकतसरलसीधांत
 मेजीनकीगतीजनंत ॥ ५ ॥ भीखमदासभल
 ॥ ५७ ॥ भेदीये ॥ गुरुपदसुरतीअभीन ॥ आद्यअंतम
 धकेजेही ॥ परमभेदपरवीत ॥ ६ ॥ वरजलाल
 आचारज ॥ छोटमदासजीनुबंध ॥ एतनेनी
 जगुरुपरमके ॥ जीनकेपरमसमंध ॥ ७ ॥ संतरी
 रोमणीबरनीये ॥ जेहीपरमगुरुवेत ॥ अबभ
 गतनभरकीकुहं ॥ सुनीयोसकलसहेत ॥ जे
 हीसायेगुरुपरमही ॥ हीनेहुकतादेखाय ॥ ति
 हीत्यावलखनरणीत ॥ भक्तसीरोमणीताय
 ॥ ८ ॥ ओरसंतगुरुसेवन ॥ तनमनसहीतस
 मेत ॥ ज्ञानभक्तीवैरागके ॥ उपजावनकेखेत
 १० ॥ कहतकीरतअबतेहुंनकी ॥ जेहीनगरजी
 नुवास ॥ गुणगरवागतीगंमजंम ॥ तंमहीनु
 करहुंपकास ॥ ११ ॥ जनरणछोडसाहाकुलभ
 येनगरबोरीयाय ॥ चीनतसोगुरुपरमकु ॥
 लहेपरमपदताय ॥ १२ ॥ देखीतसकलमंतं
 र ॥ जीनकीइष्टसचेत ॥ सारअसारनवेरीके
 भयेपरमगुरुवेत ॥ १३ ॥ वेतभयेगुरुपरमके
 उधडेहरदेकपाट ॥ परखपरीचरअचरकी ॥
 जेतनेभरजुगनाट ॥ १४ ॥ तेसबदीयेपसारीके

पाई परम उपदेश ॥ जानीत कृता जथा रथ ॥ पावन
 परम पुरेश ॥ १५ ॥ जबदल की दा कण मीठी ॥ स्वां
 ती सदन धन पाय ॥ परम पुरस पती पद मही
 सो ये ह सरन पसाय ॥ १६ ॥ वीर क्षेत्र एक नग्र ही
 वी कमत जे सरीर ॥ गुकर धरन रपत जां हां क
 रे सो राज सधीर ॥ १७ ॥ सो पुर भक्त भये दो ह ॥ ई
 श्वर दुर्ग वदास ॥ ते नमंन सही त समर पण गु
 रूप द की ये ती वास ॥ १८ ॥ धीर जवंत न्द्र दंग म
 त ॥ डगे न ही बुध हां एय ॥ सुर वीर संत न पंखे से
 वत डुरे नां प्रांण ॥ १९ ॥ न रणी त सार न्द्र सार के
 खट दर संत म त वेत ॥ पर र्भे ह पर म गुरु पदा
 जां हां ती ज बुती छ के त ॥ २० ॥ लो रु क छु उ बरी
 त की त ॥ रही नमंन की दोर ॥ उत ई त दे श्वी स
 क ल म त ॥ रही परं म गुरु गोर ॥ २१ ॥ की स्ये ह
 न्द्र ग ड प न्द्र रो पण ॥ सब ते सुर त समे ट ॥ कंची
 त च ली त न ची त की त ॥ पर म गुरु पद मे ट ॥ २२ ॥
 ये से ही धु ड गं भी र ग ल ॥ पा वं न पर म उ दार ॥
 पी ता पु त्र उ भ ये जं न ॥ धं न्य भ ये भ व पार ॥ २३ ॥
 ना ल्य ल वां णा सा ह म त ॥ भा ई जी भ क्त भ वे त ॥ प
 ग ट भू ये वे रा पु र ॥ जी न उ र सं त स हे त ॥ २४ ॥ सं स
 दर सी सर ल ल ची त ॥ ख ट दर सं न म त ची त ॥

॥ आ ॥

॥ ५८ ॥

अती उदार अवीगतगती ॥ भवत्येकरकरहीन
२६ ॥ वेदपुरांतशास्त्रगत ॥ ओरुईतीहासप्रवीन
सकलसीधांतनकेसद ॥ लहीतभेदभीनभीन ॥
२७ ॥ अवीलोकनगतीग्रंथकी ॥ न्यावीकसुरत
पसार ॥ करीतकरंमलसबनकु ॥ परहरेअखी
लअसार ॥ २८ ॥ तबतेउबरीअतमती ॥ छकीन
कोदसीछांत ॥ बोहोरुलगीजुगहेरन ॥ कुनबता
वहीतंत ॥ २९ ॥ तंतसीईकुलकारंत ॥ सरजनहा
रसवेत ॥ सीपतीपरंममेलावंन ॥ कीतपावुहनी
जवेत ॥ ३० ॥ एहीवीधीअतीवेहेवंतही ॥ आरतध
रअनुराग ॥ रवीजतमीत्येपरमगुरु ॥ लखेपुर
वकेभाग ॥ ३१ ॥ परमगुरुपरतेपुनी ॥ कीयेपरं
मप्रतीवाद् ॥ छकीतभईसुधबुधसवे ॥ देखीतग
तीअघाद् ॥ ३२ ॥ मायेपरेगुरुपरमके ॥ सबवीधीवा
दबहाय ॥ आहआहतुमसरनही ॥ आयेहकरीस
हाय ॥ ३३ ॥ परमक्रपालपरमगुरु ॥ नीजपतीदी
येलखाय ॥ कोटीजनमकेबीछरन ॥ नीनुकीये
एकताय ॥ ३४ ॥ भयेनीजभक्तनरोतंम ॥ अजर
परेअनुसार ॥ आघअंतमधकेपुनी ॥ जीनकु
तत्ववीचार ॥ ३५ ॥ तत्ववीचारविलोकीके ॥ बंसद
रसकेभाव ॥ जीनमेनीजकरतायके ॥ लग्येनही

कष्टुल्याव ॥ ३६ ॥ तबस्ये सुरतनीरतधरी ॥ गयेप
 रमगुरुपास ॥ पुष्टनलगयेपरायकी ॥ परहरीबु
 ल्मीलास ॥ ३७ ॥ मेहेरकरीगुरुपरमही ॥ उचरे
 अमीतवचन ॥ जबस्ये क्रताचीनाईये ॥ अहोप
 रमगुरुधुंन ॥ ३८ ॥ करताचीनचकीतभये ॥ गये
 अटारामोघ ॥ नीजपतीसे एकताईये ॥ जीनसे
 हुतावीजोग ॥ ३९ ॥ तीनकीआद्यसकलजंत ॥ जेही
 पुरकेपुनीलोक ॥ साचेसाचेसवनकु ॥ दीयेप
 रंमपदमोरव ॥ ४० ॥ पणनीजभक्तनरोतम ॥ स
 बकेसीरमुखीयंत ॥ परश्वकरीगुरुपरंमकी
 जीनकीगतीअनंत ॥ ४१ ॥ दांमोदरनीजभक्तही
 प्रगतेपुरभांनेर ॥ जीत्येजक्तजिन्यावत्ये ॥ ग
 हीज्ञानसंमसैर ॥ ४२ ॥ पकरलेतपरववादीकु
 धरधरदेतजबाप ॥ अरुठज्ञानअवीलोकीके ॥
 पतवेसकलअवाप ॥ ४३ ॥ जीनकीतरकगरक
 जांहां ॥ परंमपुरसपतीधांस ॥ सदचीदआनंद
 कीपरो ॥ पायेपरमवीसरंम ॥ ४४ ॥ चंगावतीए
 कनगरमे ॥ भयेभक्ततवेता ॥ अंकीतकेसुरदा
 सही ॥ क्पाकहजीतकोहेत ॥ ४५ ॥ अंतनहीअ
 नीनायके ॥ प्रमीतपेमगुनखान ॥ हर्देकुमलस
 लरहीतम ॥ वचनवेतवीदज्ञान ॥ ४६ ॥ तंनमंतस

॥ अच

॥ ५६

हीतसमरपण ॥ कीयेपरंमगुरुसरंन ॥ उवरीत
रखेनअणभर होईरहोअसरंनसरंन ॥ ४९ ॥ द
बलपुरएकभक्तही ॥ जुक्तजथारथजांण ॥ अंकी
तनारण्यदासही ॥ जीतकीगतीप्रमांण ॥ ४८ ॥ प
रसेपरंमपुरेसकु ॥ दरसेसकलसीधांत ॥ का
रजकारंनसहीतंम ॥ छेकलहेजीतुअंत ॥ ४७ ॥
परमगुरुपरतापही ॥ व्यापकतजेविवाद ॥ एक
लअरसतरखतपर ॥ परखेहकताअनाद ॥ ४६ ॥
सोकेवलकरुण्येसही ॥ अचराचरधरनार ॥ अं
ससकलअनुकरमीत ॥ मरमीतजांननहार ॥
५१ ॥ तिहीपदपरुपेहेचांनमे ॥ ज्ञानमेकरीसमा
स ॥ अखिललोकरजतजलहं ॥ जीनेसबकीये
उपास ॥ ५२ ॥ सकरतसांमथकीविभु ॥ विगत्य
सहीतवीतपंन ॥ अससहीतअवीलोकतांही
सतक्रतानअंत्य ॥ ५३ ॥ एहीविधीनरणीतपाये
हु ॥ परंमगुरुपरतीत ॥ सतसतप्रभुतंमतणी ॥
अनुभवअकलअजीत ॥ ५४ ॥ बंलादीकभवसा
लीक ॥ सरसतीसेससमेत ॥ ताहीसकलसेअ
कलीत ॥ सांमततुमेरीवेत ॥ ५५ ॥ हंमकुजांतप
रीजवी ॥ तुमकुकरीविलोक ॥ नारण्यदासनीरंभे
भये ॥ पाईपरंमपदरोक ॥ ५६ ॥ औरसकलहरी

जंनसवे। जीनुसमऊएहीसोय। तीरभेथईनी
जपदमही। भयेसरंतगत्यज्जोय॥५७॥ रासनग
रदोहभक्तही। भयेउजागरअंस॥ परंमगुरुकु
परसतां। मीटेसकलजाकंस॥५८॥ भेडुबुंस्त्र
गत्यांतके। आग्येहुतेकराल। तीरगुणलक्ष
चराचर। तीरखंतसुंन्यनीराल॥५९॥ सोपल
टेगुरुपरंमसो। सुनीतवसब्दसचेत। सुसक
ज्ञानतजीअकरत। सकरतभयेसवेत॥६०॥
परंमपुरसपरनालीका। कीन्येहुतत्ववीचार॥
दीरघचक्षुकर्देरवतां। परखेहुसारअसार
६१॥ सारसकरतासामथ। अकरतअगुनअ
सार। न्यायसहीततीजनरणावी। लखवायेहु
कीरतार॥६२॥ नहीतरवहीतलज्ञानमेजांस
हसुंन्यदवार॥ धंन्यधंन्यगुरुपरंमही। सामथ
लीयेउवार॥६३॥ जदीपजातजोसुंनमे। अंसन
सुंन्यसमात। साहकरतकोपतीवीनु। भटक
भटकजुगजात॥६४॥ सोभटकणभवदुरवन
कु। मेटदीयेगुरुदेव। नीजकरताओरुआप
नपु। समऊेसकलसभेव॥६५॥ पाहेपाहेगुरुप
रंमही। मरमलखायेहुहाव। अवनरीरचीअ
बलगमही। आलखअगंमअघाद॥६६॥ सही

॥ आ ॥ तपतीपतवीनहुते। सुणीतसुंन्यवतज्ञान। अही
 धंन्यसोहीपतीनको॥ करवायेहअवीलांत॥ ६७
 ॥ ६७ ॥ एहीपरकारंनकीवीने। परमगुरुकीसोय। ला
 लदासः। ओरुसंमळ। भयेसरनगतदोय। ६८
 ओरभएकभक्तही। चीखोदरपुरगंम। कुल
 केकनकसधारेन। भाईजीदासजीनुनांम। ६९
 अतीनीरमलमतगतजीनु। हीनदीनपेमवी
 सेस। पुरसनाससहीतंससदा। पदपायेहपर
 मेस। ७०। परमगुरुउपदेशते। परमपुनीतभये
 दोय। जंतंममरंनभयेभवतणे। संसेरहोनको
 य। ७१। नीकटनीकटकेवरनीये। भक्तसीरोसणी
 सोय। डुररहनकेभक्तही। बोधअघादेजोय। ७२
 ओरसंतहरीजंतसबे। लखेतजीनकेअंक। सा
 रधारसंतमुखंतकु। नीजपदपायेनीसंक। ७३
 कोहरीजंतकोसंतही। जेहीसरंनगत्यआय। उ
 देअस्तवीछरेनही। तेहीपरंसपदपाय। ७४। उदे
 अस्तजीनकुकहे। मरमलखाबुहतास। उदेस
 रंतआयेजवी। अस्तहोयतनुनास। ७५। एदीनु
 हघवीचरहे। सनमुखआयनअंत। तीनुमोक्ष
 केवलतणे। सहीतभक्तओरुसंत। ७६। सरणा
 गतआयेपीछे। जेहीजंतवीछरेसोय। घोरनरक

रोउरोउपरे। पारनपावहीकोय॥११॥ इति श्री अ
 चरतसागर ग्रंथ अष्टमो कंड ॥ ८ ॥ अथ सीसन
 रकपरनघुनेघारीको सक्रतसीधंततवमोकंड
 बोलेहजेहीपतीवादिते॥ तुमेरेवचनसनीत॥
 रोउरोउकीपीछेकही॥ तीनकीकहोगनीत॥ १॥
 कुकरमकरतसकलजुग॥ तेहीभुगतततनुधा
 रागभीतदोशनहीजावत॥ पतीपेकीउसंसार
 २॥ जीवहनंतजेहीजीवकु॥ कोटीकअपरंमपार
 बोहीरुहनंतहननारकु॥ सकलवारकेवार॥ ३॥
 केतेकभजनप्रतापसे॥ मेरतअघअगनीत॥
 केतेकरेहेनीकरनीसे॥ होवतपापअनीत॥ ४॥
 केतेकसीलवृतसंमदंमे॥ दयादीनयेजातअ
 लपघुनाअनुचीतनके॥ गनतनहीनीजतात
 ५॥ केतेकसतभासंतुहते॥ असतनउचरतरं
 च॥ हलनचलनगत्यसेहेजके॥ अगमेकघुनवं
 च॥ ६॥ केतेकसरलसभावसे॥ कघुनमनकुटला
 य॥ न्यायकरतनरओरनके॥ दुभवीतदोसनता
 य॥ ७॥ केतेकमुनीवृतधरहीते॥ सहीतसाचपती
 हेत॥ व्रथावदनअगताईकु॥ कपोकरीलागीसके
 त॥ ८॥ देतदावईतकेईत॥ तीतकेनहीघुनेगार
 कीयेवैअअरकुंडकु॥ कवनकाजकीरतारा॥ ९॥

॥ आ० ॥

॥ ६१ ॥

सुनो कहत गुरु परम ही । मो मुख करी उचार । तीन
 के जेही परी उत्तर । देत सुनो पुछनार ॥ १० ॥ कह आग
 प्रतीवादीने । जीनकी कोहोगतीत । एक एक त्ये करी
 के कह । जेही जीनु होय अनीत ॥ ११ ॥ प्रथमो दीरघ स
 वत हुते । कता होइ गुरु दोह । त्रतीयो नीज प्रांत मह
 ती । वीसै चतुरथो सोय ॥ १२ ॥ नंदी कहरी जन संतके
 पंचम कीये पुरेश ॥ छठो अंश प्रवतारके । अगु नध
 रंन उरेश ॥ १३ ॥ छते पंड संत मुखनके । नंदी कहने
 सगात । तीनके ती ईतके ईत । प्राचीत भये ती पात
 १४ ॥ हरी के हंन्ये न लायक । नंदी करहे सो ओर । ती
 नुतसकी रंनकी गती ॥ खपे सो खटके गोर ॥ १५ ॥ एही
 खट अपराधीयनके । काजकी ननके कुंड । ओर स
 बेअवगतनकु ॥ सुक्ते सकल अकुंड ॥ १६ ॥ संमदर
 सी गुरु परंम ही । सरल सभावीक सोय ॥ कही स
 कत नही नीज मुखे । जबी उचरे मुख मोय ॥ १७ ॥ ई
 ती श्री अक्षर तशागर ग्रंथेना मनव मोकंदं समापते
 ॥ जंत मुख उचरन प्रतीतकी सकत सीधांतकंद
 दशमो अंश ॥ ओर मुखके उचरंन जेही । ताडंन शब्द
 गाज ॥ ज्यो सीघन सीर फोरही ॥ पर मुखना लप्रवा
 ज ॥ १ ॥ ल्यो मेरे मुख बचनही ॥ सत गुरु उचरन सेय
 बंसादीक भवसा लीक ॥ मेटसके नही कोय ॥ २ ॥

सिटेनही एही वचनकु। कोहोकुनही अभी प्राय
 सरस अधी कएक एक तसे। ईष्ट भेद कहु न्याय
 ३॥ सकल देव सीर गुन त्रीये। गुन सीर प्रकृती पु
 रेसा। प्रकृती पुरस सीर बंलही। व्यापक सक
 ल उरेस। ४॥ बंल परंतु कैवल। छेवट नीज करता
 र। जीनके सुध संकल्पन से। कीन सकल वीस
 तार। ५। प्रकृती पुरस ही तंम गुण। व्यापक बं
 ल सतंत। तेही सबनके सीर जेही। अधी पती
 कैवल अंत। ६। तेही पती श्रीरुतीनके जंत। उ
 भये करंत पती पाद। कुन मेटे तेही वचनकु। जी
 नके सकल आराध। ७। अंगंम अथाह के थाह
 ही। करंत परंम गुरु जांत। परमुख पती तब
 वंत। मम घट उचरे आंत। ८। श्रीरुनीज मुखके ब
 चनकु। आवत नही वीस वास। तेही वचन पर
 मुख सुने। सबकी ईधरत हलास। ९। ज्यों नां
 ले चालत। जुगके सकल वेहेवार। देवत वाल
 जो सतके हे। लेहंन नही पती यार। १०। तेही दाम
 दरसावही। नां एावटके हाट। लेनहार पती या
 वही। परमुख कीयाते माट। ११। श्रीमुखके नी
 ज वचनकु। नरपत दीये उजाय। पांडवकी पछी
 लत। एकुन मांती ताय। १२। तेही वचन व्या संत

॥ अच

॥ ६२

सुख उचरं नगीताज्ञान ॥ कौहुनमे टत जुग मही
करत सकल अवीलांत ॥ १३ ॥ ओर अगत्त तीज
दाहसे ॥ दरदमीटे नही कोय ॥ परमुखके लोही
तपनसे ॥ दागदीये सुख होय ॥ १४ ॥ जेत न्ये नर
नर स्वासके ॥ सुसमपण वयोकार ॥ तेही स्वास
वाजंत्रमे ॥ करही प्रोट्टहंकार ॥ १५ ॥ माहाद
न सुतरवी नये ॥ नीजंतं न नीर न होय ॥ परमुख
आभ्रघटायसे ॥ बरसजीवावत लोय ॥ १६ ॥ ज्यो
तियंनसे नवतरे ॥ परमुखनाववीनाय ॥ यों पर
परसे बुहंसरे ॥ कुहुदष्टंत सुनाय ॥ १७ ॥ ज्यो बीज
गत रुनीज मुखे ॥ एकएकपेजी तुअंत ॥ तेही बी
जगजमी परमुखे ॥ एकत्ये होत अनेत ॥ १८ ॥ नी
जकारंत कारजमही ॥ करतही प्रोट्टपसार
कलसंसकल महीरही ॥ अगत करत उच्चा
र ॥ १९ ॥ नीरसकल सबकुपके ॥ सरसलीताजे
ही आद ॥ परमुख इक्षुतसे जेही ॥ होवतमी ए स
वाह ॥ २० ॥ ज्यो जेत न्ये पदमाहायही ॥ परमुखदे
तबडाई ॥ आपेतो अवीगत्यरही ॥ परके स्वरद
साय ॥ २१ ॥ तबमेरे गु रूपरं मही ॥ मो मुख उचरे
आय ॥ अचल करंत तीज वचनकु ॥ राखत परं
मपराय ॥ २२ ॥ दासंतके हीरदेरही ॥ अवीगत्य

चसेआप जुगजांणे एही जंतवदे अहो धंतग
 रुवाप ॥२३॥ एही वीधी की रती बढावंत जंतआ
 पत्येके हेत ताय सरंन तजी भरमत सोनरुप्र
 धंम अचेत ॥२४॥ परम क्रपाल दयाकर भवके
 करन उधार ॥ खुदघर सेधर आयेह ॥ सांमथम
 जुअवतार ॥२५॥ नीजपती सेज बीवी ससेहा अ
 गणीत अंश अंतंत ॥ बोहोरुहं करनती वास
 कु ॥ कतारचेह बहंतंत ॥२६॥ तेही तंतम ही जंत
 ही ॥ सकल बीरा जेहं आंत ॥ जेही पदसे सदआ
 येहं ॥ भुलगयेह तेही आंत ॥२७॥ करंन बोधतेही
 जीवंत कु ॥ खुसेह जेही घर आद्य ॥ तवये प्रायेप
 रंम गुरु ॥ धरही परंमतनुमाहाद्य ॥२८॥ जोजां
 नो तोजांनुह ॥ मात होवचनहं मार ॥ तो सरनां
 गत आवुह ॥ जीनकु परन भवपार ॥२९॥ पारक
 रननीज जंतन कु ॥ पठवावंत पती धांम अच
 रतजबी करुणा मये ॥ करुणा सागरनांम ॥३०॥
 ॥ इती श्री अचरत सागर ग्रंथ दशमो कंद ॥१०॥ स
 पुर्ण ॥ परम गुरुनांम नरणीत कोसकृत सीधंत
 नामरुका दशमो कंद ॥११॥ प्रारंभ ॥ जेही कहे गुरु
 परमके ॥ करुणा सागरनांम ॥ जीनके अरथ
 वतावुह ॥ पावंत परंम विरंम ॥१॥ सलीतासक

॥ अच ॥ लसमोहको ज्योनीजसीधुसमाय ॥ तबसेपुष्टी
 पायके सागरनांमसराय ॥ २ ॥ यावीधीकुहु
 ॥ ६३ ॥ करुणायके संचसमोहनसोय ॥ तेजीनुमांही
 समावही ॥ करुणासागरज्योय ॥ ३ ॥ देवसकलक
 रुणायके तीनकेभईसमोह ॥ पुनहीपरंमगुरु
 तंनमही ॥ जायमीलेसबसोय ॥ ४ ॥ प्रथंमपुरु
 षकरुणायके ॥ अहंपदधरतसधीर ॥ होवतस
 तीकरुणायसे ॥ सबतंनुसाजसहीर ॥ ५ ॥ गुण
 घणकीकरुणायके ॥ तंनकेगुणघणसोय ॥ सुल
 सुसमतंनकुरखे ॥ आक्रंतीवतज्योय ॥ ६ ॥ रवीक
 रुणानेननमीली ॥ दुरसावतसबतंत ॥ वरुणज
 गंत्यरसनामुख ॥ उचरतगीराअनंत ॥ ७ ॥ अरु
 नसाहदीगपालकी ॥ नासाअश्वनीकुमारु
 चामारुतकरसुरपती ॥ सबतंनुएहीअनुसा
 र ॥ ८ ॥ सुरसकलकेएहीवीधी ॥ एकएककरुणा
 अंग ॥ सरवसमेटसभोम्यही ॥ पायेहुपरंमउ
 तंग ॥ ९ ॥ परमउतंगपरंमगुरु ॥ जीनुतंतकी
 येतीवास ॥ करुणासकलसमोहको ॥ रहतसदो
 दीतवास ॥ १० ॥ एहीवीधीपरंमगुरुमही ॥ सुर
 करुणायसमोह ॥ तातेकरुणासागर ॥ तांमत
 दानरदोह ॥ ११ ॥ नीरदोशीनेहीतांमही ॥ जीत

केसीरपरहोय।तीनकुक्कहतपरंमगुरु॥देन
 परंमपदसोय॥१२॥देवसकलकरुणामये॥
 क्रतानांमकरुणेश॥सागरनांमनकाहुको
 वीनुपरंमगुरुभेस॥१३॥देवसकलकरुणा
 यके॥एकएकअंगीअंत॥बकसीनीजकरता
 यकी॥पेरकसुरगुणवंत॥१४॥ओरसकलस
 वतंनमही॥करुणाएहीपरकार॥पणकरुणासा
 गरनहीतीनकेकहुअनुसार॥१५॥परंमगुरुजो
 नतसवे॥परकरुणातंतुगंम॥तीनकेमलीत
 समोहकु॥करुणासागरनांम॥१६॥नांमकहे
 जेहीसागर॥परंमगुरुतंतुसार॥पणनीजअ
 लगपरमगुरु॥जेहीतंतुमांहीवसनार॥१७॥
 तीनकुक्ककरुणाकोहनकी॥लागीसकतनही
 सोय॥देवसकलआश्रीतजीनु॥परसेपरस
 सकोय॥१८॥परंमगुरुतंतुसागर॥अलगप
 रंमगुरुआप॥ताहांतहीसागरसंभवे॥जेहीनी
 जपरमअजाप॥१९॥परउपगारीपरंमगुरुजे
 हीकरुणाकेरुप॥जडसागरतंतुतेहनसे॥कौं
 कीयेतांमनीरुप॥२०॥जडसागरतीनकेतंतु
 करुणाकरंततयेस॥तीनकेलसलखाबहु॥
 सुनीयोसकलजनेस॥२१॥जेहीजेहीअंसन

॥ अच ॥ कीपर करुणा कर ही ज दीप ॥ तांहां तांहां ज डत
 नुसा राश ॥ आवत अरथ त दीप ॥ २३ ॥ तीमणा
॥ ६४ ॥ देखन नै न ही ॥ सुनवा श्रोत अस्तुता गीरा करे
 न उपदेश ही ॥ लागत काज संजुत ॥ २३ ॥ एही प
 रकार सकल तनु ॥ लगत गुरु के कांम ॥ तब लये
 जड चैतन मीली ॥ करुणा सागर नाम ॥ २४ ॥ क
 रुणा तंन गुरु परम के ॥ जड सागर तनु वेश ॥ उ
 भये कु एकता मीली ॥ होवत जंन उपदेश ॥ २५ ॥
 ओर अंस कु एही वीधी ॥ अनुभवत ही अनुसार
 जड तंन सागर आपन पु ॥ न्यारे न तत्व वीचार
 २६ ॥ तब लये ही करुणा को ह पर ॥ कशी सकत न
 ही कोय ॥ आपत रंन की ना बने ॥ ओर की कुत
 कहोय ॥ २७ ॥ जड तंन सागर आपन पु ॥ लये न
 भी न सभे द ॥ तब तीनु सागर नाम के ॥ उभये
 सही त उष्टे द ॥ २८ ॥ जव लये करुणा सागर परं
 म गुरु एक सोय ॥ ओर सकल सब अंस मे ॥ क
 रुणा वंन कोय ॥ २९ ॥ एही परं म गुरु नाम को
 न रणीत की ये नी रा ल ॥ जे ही को हुन के सी र न
 ही ॥ देख हो दुष्ट वी शाल ॥ ३० ॥ परम गुरु जी न कु क
 हे ॥ देन परम पद दान ॥ परम पुर स दर साव ही
 जे ही नी ज क्रता नी दान ॥ ३१ ॥ नीर गुण सीर गुण

कीपरे परंमपुरसपरमेश। ओरसकलपर
 भाषके। उपासकभवमेश॥३२॥ परभावीकमे
 सबपचे। जीनुजेहीइठवीसवास। पणनीज
 क्रताचीनायसे। सफलीतसकलउपास ३
 ३॥ इतीश्रीअचरतसागरग्रंथअगीयारमोकंद
 समासे॥ ११॥ अथदीव्यपरमगुरुउपासकोत्या
 यसकृतसीधांतअंग॥ १॥ उपासकबीनुअंशके।
 कारजकबुनहोय। तबसेकरहीउपासना।
 परमगुरुकीसोय। १। परमगुरुबीनओरत
 की। करहीउपासंतअंश। कोइकालेफलदा
 यकानीरफलनहीनीरवेस। २॥ फलप्राप्त
 पणतेहनकी। जेहनकीकरहीउपास। जौक
 एबोहीततेहीतफले। ओरकीनहीनआस
 ३। जबतंपरमगुरुबीन। यहननीजकरताय
 क्रतालहेबीनुकारज। सरेंनकोटीउपाय। ४।
 कोटीउपायसोक्रतनके। सिंधनसकलसबेस
 जीनसेक्रतातपावही। रहतवीमुखसबअंस
 ५। एहीपरकारनअंसकु। अमतदेखीभवमां
 हांय। क्रताप्रापकरुणाकरी। भिजेपरमगुरुआं
 हांय॥ ६॥ परखकरीगुरुपरमकी। नीजगंमनें
 नउघाड। जीनकेसरभरकोइतिही। अतीअथा

॥१॥

हगतीगाढ॥७॥ चौदेइतेबकअचरचर॥ देख
होइइष्टीसाल॥ रचेहसृष्टीनुअबलगी॥ को

॥६५॥

हनक्रतातीहाल॥८॥ सकलआचारजआद्युलो
ओरुईश्वरअवतार॥ ब्रह्मअसीभयेज्ञानसे॥
कीयेतआद्यवीचार॥ ९॥ आदीवीचारतांअ
सु॥ जाहांसबमसुसमान॥ सोकरतानचीने
कोहं॥ अलेइब्रह्मगनांन॥ १०॥ जबतेपरमगुरु
पथी॥ आयेधरीतमनुवेश॥ ईश्वरसहीत
आचारज॥ जीनुकरंनउपदेश॥ ११॥ उपदेशी
गुरुपरंमके॥ अतुभवअकलअरुढ॥ ब्रह्मा
दीकभवसस्वीक॥ लहेनजीतकीगुढ॥ १२॥
एहीनीजअचरतस्यागर॥ ग्रंथसुधारसज्ञां
न॥ अजरअमरअवीगतगती॥ पायकरही
अवीलांन॥ १३॥ क्रताकरतकीकीमत्य॥ क
लीतसकलतनुज्ञान॥ पुनहीपरमपदपर
खही॥ करहीग्रंथअवीलांन॥ १४॥ बोहोरुन्या
यनीजनरणीत॥ करंनलखीतकीरतार॥ सोसुध
सकलसीधांतकी॥ पावहीग्रंथमोऊर॥ १५॥ ज
वरहीग्रंथआलोचतां॥ सकलसोजसमजाय
पुनहीमीलेगुरुपरमकु॥ अंसयारंगतथाय॥ १
६॥ तावीनअवरउपायत॥ क्रतामीलनकोकोय

अंशपारंगतकरंतकु॥ एकपरमगुरुसोय॥ १७
 ७॥ सकलसीधांतनकेसव॥ देखेहदीरघमतंत
 प्रकृतीपुरसगुणबुद्धसै॥ सबमेयपेसतंत॥ १८॥
 जीनमेकतानकोहकीनु॥ अंशउपावंनहार
 पतीविनुअपतीपदारथ॥ कथीकथीगयेअपा
 र॥ १९॥ निगंमचतुरखटसाहास्तरा॥ ओरुही
 हासपुराण॥ अकरतपतीपदकतंतनके॥ करी
 गयेसकलबुद्धांण॥ २०॥ एहीपरकारहीतरणी
 त॥ अंथनिगमगतीजोय॥ सबमेधेकवीचार
 तं॥ नीजपतीकर्तनकोय॥ २१॥ ओरमतंतर
 भीनभीन॥ रुसीसवनकेसोय॥ रचवेनेनीज
 स्वारथ॥ कतानचीतेहकोय॥ २२॥ यावीधीदृष्ट
 चराचर॥ करीतआद्यमधुअंत॥ देखीदेखीसब
 डुरतीये॥ जीनुमोहीतसबजंत॥ २३॥ बोहीरुप
 रमगुरुसरनमे॥ प्रायमीलीममसोय॥ सकल
 भावसमरसभईतरकनवंचीकोय॥ २४॥ तर
 कतमाकछुतारखी॥ तेहीतेहीबुकेबुजांण॥ ते
 हीतेहीपरीउतरनमे॥ परमीतपरीपेचांण
 २५॥ जबतेहीपरमपेचांनये॥ लहोपरमगुरु
 सोय॥ तंतमंतकरीसमरण॥ भईसरनगत
 मोय॥ २६॥ देखीसमरणसतमम॥ परमगु

॥ अच

॥ ६६

रुपतीलाय ॥ ती जगं मलसक्रतापदा ॥ जबत्येदी
येलखाय ॥ २७ ॥ क्रतात्यावदेरवीतरबुले ॥ अवीग
तनेन अनुप ॥ जुगधरजेहीमतंतरा ॥ पायेहसक
सजनुप ॥ २८ ॥ षट्दरसंतदादशपुनी ॥ तीगम
चतुरजेहीवांण ॥ अष्टादशतवनरणीत ॥ कीत्ये
हसकलपेहेचांण ॥ २९ ॥ पणसीलेअचरतईत
तेहीसबनकीपेज ॥ क्रतासहीतजीनुअकयही
जीनकाकीयासवेज ॥ ३० ॥ जेहीजीनकाथातेही
तीनु ॥ दीयासीदांतदेखाय ॥ पणनीजपरमक्र
तायके ॥ कीहमरमनहीपाय ॥ ३१ ॥ तेहीमरम
गंमसबनत्ये ॥ अकलीतरहेअपेख ॥ जबनीज
क्रतापगयेहं ॥ धरीपरमगुरुभेख ॥ ३२ ॥ भेख
धरीगुरुपरमके ॥ दरसेदुनीमोजार ॥ आर्मी
त्येजेहीसतसुख ॥ तीनुकरहीभवपार ॥ ३३ ॥
बीनुपरमगुरुपावत ॥ परममोक्षनहीकोय ॥
अचरततवगुरुपरमकु ॥ आर्मीमोसबको
य ॥ ३४ ॥ मीमोतोमीलं तामाहासुख ॥ तुरतस
रनमेजात ॥ तीनुसरजेतुंमलंसकु ॥ सोहीमला
वहीतात ॥ ३५ ॥ तातमीलनत्रपतीयंनकी ॥ कही
नजायसहेत ॥ कोटीजनमकेबीछरंन ॥ पायेहप
रमसखेत ॥ ३६ ॥ अंसदुखहीकहीकालही ॥ रहे

हुकतावीजोग। अबतेहीसुखकीकपाकृत्। जी
 नकेमीलेसंजोग। ३७। अल्पजीवंनप्रायुसंन
 के। जोससुबीछंरंनमात्। आईमीलतदीनथोर
 मे। तबकेसेसुखपात। ३८। तेहीतेयातीअचल
 सुख। कतामीलनकोसोय। तेहीअचरतगुरु
 परमसे। पाईसकलवीधीसोय। ३९। जेहीनीज
 पतीनीरभयेतए। परमपुरातंनधांम। अचर
 तअरवीलसुखदमही। पांमेहीअचलवीरंमध
 ०। एहीग्रंथनकेअचरंन। हरदेरहीममसोय
 करनहारगुरुपरमही। धरीममबोजसीरोय
 ४१। तुकसाएकनवीननीज। ग्रंथमहीगुरुभे
 दासोलेअचरतकीजीनु। गतीनयावहीवेद।
 ४२। जेहीवीनुगंमगतीअचरत। करतलहत
 जीनुअंत। अचरतकेअनुभवकीये। मेमीभैअ
 चरंत। ४३। खटदसअचरतकोमीली। रहन
 समीहसगांम। जबत्येअचरतसागर। एहीगं
 थकोनांम। ४४। अचरतसागरगंथको। गाव
 तहीगुणग्रांम। अचरतअचरतगंथसे। मेरीअ
 चरतनांम। ४५। ओरवीसेशणसहीतंम। क
 हतनांमतरण्येण। सबअचरतकेसदनसे। ज
 वअचरतअरण्येण। ४६। जेहीअचरतअरण्ये

॥ श्री ॥ शको ग्रंथवरनगुणगंम ॥ सीखे सुने सुधचीत
 मंते पावही परमसधांम ॥ ४५ ॥ जीनमे नीजक
॥ ६७ ॥ रतायको नीसे करत नीरुप ॥ सहित परमगु
 रुको जीमे ॥ तरणी तलक्षस्वरूप ॥ ४८ ॥ श्रीरल
 क्षत्रगणीतप्रती ॥ ग्रंथमही सुवीचार ॥ पणक
 रतानी जन्मचरत ॥ परमगुरु त्रीये सार ॥ ४९ ॥
 त्रीये सार स्वग्रंथमे ॥ अरथ अलोकीत मर्म ॥
 अचरत जीनु अवी लोकतं ॥ पाये सकल पदप
 रंम ॥ ५० ॥ इती श्री अचरत सागर ग्रंथसंपुर्णः ॥
 समाप्तः ॥ नाम द्वादशमो कंद ॥ १५ ॥ संपुर्णः ॥